लोक नाट्य

# जट-जटिन



रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

लोक नाट्य

# जट-जटिन

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

प्रकाशक
अभिनय प्रकाशन
इन्द्रपुरी, पटना - 24

प्रकाशक : अभिनय प्रकाशन
इन्द्रपुरी, पटना – 24



प्रथम संस्करण : जनवरी – 2007

मूल्य : 50/- टाका (भारतीय)
80/- टाका (नेपाली)

शब्द संयोजन एवं आवरण : अभय कुमार झा

मुद्रक : शेखर प्रकाशन
इन्द्रपुरी, पटना – 24
दूरभाष : 9334102305

प्राप्ति स्थान :

- शेखर प्रकाशन
  इन्द्रपुरी, पटना – 24
- चन्द्रेश
  मौलागंज, दरभंगा
- रेलवे बुक स्टाल,
  जनकपुरधाम, नेपाल

*Lok Natya Jat - Jatin* (Laghoosodh)

## प्रथम प्रतिक्रिया

लोक-साहित्यक विवेचना यदा-कदा पढ़ैत रहलहुँ। अधिकतर पल्लवग्राही लागल। मूलग्राही विवेचना प्राय: पहिल बेर भ्रमरजीक प्रस्तुत लघुशोधमे भेटल। प्रचुर मूल सामग्री आ' तकरा चुनबाक मर्मग्राही दृष्टि एकर असाधारण उपलब्धि थिक। पढ़ैत काल लागल जेना छोटका परदा पर देखैत होइ। उद्धरण सभक अविकल पारम्परिक स्वरूप नि:सन्देह भाषाशास्त्रीक हेतु मूल्यवान् होएत। लघुशोध कहैत अछि जे भ्रमरजी अधिकतर अपन आँखिक देखल आ' कानक सुनल पर निर्भर रहैत छथि। दोनमरी स्रोत पर कम। एहन गहना टेबुल पर नहि गढ़ल जाए सकैत अछि।

पटना
तिला संक्रान्ति, 2063 वि.

–गोविन्द झा

# जट जटिनक मादे

बिहार ओ नेपालक क्रमशः उत्तरी ओ दक्षिणी सीमांत क्षेत्रक आर-पार पसरल सांस्कृतिक मिथिलांचलमे लोक परम्परित नृत्य नाट्य 'जट-जटिन' आइ-काल्हि विशेष शोध- बोधक विषय बनि गेल अछि। अनावृष्टिक स्थितिमे, पर्यावरणक दृष्टिमे एवं लोकधर्मी नाट्य परम्परामे रंगशिल्पक परिवेशमे अथवा अनुष्ठानिक वृष्टिकल्पक संदर्भमे एकटा लोकानुष्ठानिक अनुरंजनक दृश्य-परिदृश्य हो।

स्त्री प्रधान लोकधर्मी नाट्यक रूपें मंचित 'जट-जटिन' ओ 'डोमकछ' वस्तुतः ग्राम्य जीवनक गृहस्थीक एकटा लोकानुरंजन अलबम बनि गेल अछि, जाहिमे विवाहक समस्या (गृहस्थीक आधार बिन्दु) गार्हस्थ जीवनक इच्छा- आकांक्षा (राग- उपराग), पुरूष लोकनिक वर्चस्व (अहं), नारीक शोषण ओ दमन (पुरुषवादी मानसिकता), रोजी- रोटी लेल शहर दिस उन्मुखता (श्रमिक पलायन), आभूषण प्रियता (वैश्विक बाजार), खेती- बारी (कृषि आधारित जीवन), चिकित्सा (स्वास्थ्य विषयक समस्या), आदिक अलावा विवाहक सामाजिक आवश्यकताक मुक्त अभिव्यक्ति भेल अछि। 'जट जटिन' ओ 'डोमकछ' रंगकर्मी ओ प्रेक्षक स्त्रीगण ओ मंच एवं रंग भूमि बंद घर आंगन होइत अछि।) पुरुष लोकनिसँ मुक्तताक कारणे अभिनय उन्मुक्त होइछ। डा. जगदीशचन्द्र माथुर 'जट जटिन' क जनसम्प्रेषणीयताक महत्त्व देलनि एवं अनिल पतंग किंचित परिमार्जित कए नागरमंच पर सात सय चौरासी प्रदर्शन करा ई प्रमाणित कए देलनि जे एहिमे जनसम्प्रेषणीयताक अद्‌भुत सामर्थ्य छैक। अधिकांश प्रदर्शनक उपरांत निरभ्र आकाशमे बादल उमरि अएलैक एवं वर्षा भेल। प्रेक्षकमे उपस्थित भौतिक शास्त्री लोकनिक समक्ष ई आब यक्षप्रश्न बनि कए ठाढ़ अछि जे जट-जटिनक गीतसँ उत्पन्न ध्वनितरंगसँ कि वायुमण्डल प्रभावित होइत अछि? म्युजिक थिरैपीसँ चिकित्साक सफलतासँ वैज्ञानिक बेस उत्साहित छथि।

जट जटिनक एकटा उद्देश्य प्रमुख अछि- ग्रीष्मातपसँ अकुलाइत धरतीक वैदिक देवता मेघराज इन्द्रक स्तुति, मेघक संवाहक वेंगक मर्दन ओ सामूहिक नृत्यसँ आबद्ध अभिनयसँ वर्षाभिषेक देश-देशांतरमे वर्षाक लेल लोकानुष्ठानक परम्परा नेपाल ओ भारतक विभिन्न जनपद सभमे लोकप्रचलित अछि। नेपाल ओ भारतमे वृष्टिकल्पक उदाहरण धर्मराज थापा, राम भरोस कापड़ि भ्रमर, प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन, विद्याविन्दु सिंह, हरिमोहन मिश्र, भूपेन्द्र हजारिका आदि अपन शोधालेखमे प्रस्तुत कयलनि अछि। एहि तरहें नेपाल तराई ओ बिहारक मिथिलांचलक अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु आदिक धरती पर वृष्टिकल्पक अनेकानेक लोकविधि सभ प्रचलित छैक। वृष्टिकल्पसँ अर्थ अभिप्रेत अछि- वर्षाक लेल आनुष्ठानिक कृत्यादिक संपादन।

'जट जटिन' क कथानक मिथिलांचलक ग्राम्य परिवारमे सृजित अछि। संवाद प्रश्नोत्तर शैलीमे, अभिनय एकल, युगल ओ सामूहिक, वेशभूषा सहजो पलब्ध, चरित विधान ग्राम्य परिवेशक अनुकूल, भाषाशैली काव्यात्मक मैथिली, उद्देश्य वर्षा हेतु मेघराज इन्द्रक स्तुति, लौकिक अभिचार एवं स्त्री लोकनिक एकांत लोकानुरंजन, रंगभूमि बंद घर-आंगना ओ प्रेक्षक पुरुष हस्तक्षेपसँ मुक्त गामघरक स्त्रीगण लोकधर्मी नृत्य नाट्य परम्पराक प्रतीक 'जट-जटिन'क चर्चित पक्ष अछि।

नेपालक मिथिलांचल लोक संस्कृतिक विशिष्ट अध्येता राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' प्रायः तीस- पैंतीस वर्षसँ निकट सम्पर्कमे छथि। एहि पारस्परिक सम्पर्कक सारस्वत अवदान 'जट-जटिन' मे पाबि आहलादित छी। मिथिला ओ मैथिलीक शोधजगत एहि अवदानसँ उपकृत होयताह, से विश्वास अछि।

**–डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन**

प्रोफेसर कॉलनी, महनार
(वैशाली) 844506

कार्त्तिक धवल त्रयोदशी
2006 ई.

## अनुक्रम



# मिथिलाक लोक नाट्य

हिमालय हमरा लोकनिक संस्कृतिक अजस्र स्रोत बनल अछि। ओहिसँ नि:सृत नदी सभ एहि भूभागक सभ्यता ओ सांस्कृतिकेँ प्राणवंत बनौने अछि। वन पर्वतक नीलाकाश आ शस्यश्यामला धरतीक मंचपर लोक अपन-अपन लीला प्रदर्शित करैत अछि। एहि लीला सभकें हम सांस्कृतिक संदर्भ मे खेल, नाच, नाट ओ नाट्य कहैत छी जे शताब्दियोसं लोकानुरंजनक सहजोपलब्ध माध्यम बनल अछि[1]।

लोक जीवनक सुख, दुख, स्नेह-सद्भाव, जय-पराजय, शौर्य पराक्रम, संयोग वियोग, हास-परिहास, शक्ति ओ भक्ति अपन सम्पूर्णतामे प्रतिबिम्वित भेल अछि। एकर गठन कलात्मक, प्रस्तुति आडम्बरहीन ओ सम्प्रेषणीयता अद्भुत अछि। फलत: एकर संदेश सार्वदेशिक आ सर्वकालिक बनि गेल अछि।

मिथिलांचलमे नाट्यकेँ नाच कहल जाइछ। नाच नृत्यक तद्भव रूप थिक ओ नाट नाट्यक प्राकृत रूप। मिथिलाचंलक कीर्तनियां एवं असमक अंकियाकें नाट कहल गेल अछि। मध्यकालीन नेपालमे नृत्य ओ नाट्य अभिन्न अछि। हरिश्चन्द्र नृत्यम् दशावतार नृत्यम् आदि एकर उदाहरण बनल अछि। यद्यपि नृत्य ओ गीत प्रधानक कारणें एहि सांगीतिक अभिनयकेँ ज्योतिरीश्वर ओ विद्यापति नृत्यक सीमामे बान्हने छथि। ज्योतिरीश्वरक (वर्णरत्नाकर) नृत्य वर्णना, पात्र नृत्य ओ प्रेरणानृत्य एवं विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक नृत्य विद्याविद् ओ गीत विद्याविद्क परिवेश निसंदेह नाट्य बोधक अछि।

॥ नाच ॥

मिथिलांचलमे एहि लोकानुरंजन विधाकेँ नाच कहल- जाइछ। लोरिक नाच, कमला नाच, पमरिया नाच, नारदीनाच, विदापत नाच आदि एवं नेपालमे रथ यात्राक अवसरपर प्रदर्शित कार्त्तिकनाच ओ मिथिलाचंलमे कीर्तनियां नाच, पारिजात हरण आदिक नाच परम्परा अद्यापि अवशिष्ट अछि। ज्योतिरीश्वर (चौदहम सदी) वर्णरत्नाकरमे लोरिकनाच एवं विद्यापति (चौदहम पन्द्रहम सदी) गोरक्षविजयमे दक्षिण देशीय नाचक उल्लेख कयने छथि। एवं प्रकारे मिथिलाचंलमे नाच शताब्दीयोसँ लोकानुरंजनक जीवंत ओ सशक्त माध्यम बनल अछि।

आचार्य भरत नाट्य शास्त्रमे दू प्रकारक नाट्य प्रवृत्तिक उल्लेख कयने छथि -शास्त्र धर्मी एवं लोकधर्मी, जे क्रमशः राजकीय एवं लोकाश्रयमे समानांतर रूपें विकसित होइत रहल। लोकधर्मी नाट्यसँ भरतक तात्पर्य ओहि परम्परित नाट्य सभसँ छल, जे लोकानुरंजन करय एवं लोकक धूपछांही जीवनकें प्रतिबिम्वित करय। कालचक्रक कारणे शास्त्रीय नाट्यक विकास विखण्डित रूपें होइत रहल मुदा लोकधर्मी नाट्यक निरंतरता बनल अछि। ओ नाचक रूपमे अवशिष्ट अछि। मध्यकालीन परिस्थितिमे राजाश्रयक अस्थिरता, संस्कृत प्राकृतक ह्रासोन्मुखी अवस्थिति एवं देसिल बयनाक बढ़ैत लोकप्रियताक कारणे शास्त्रीय नाट्यक भीत पर प्रथमतः भाषा नाट्यक उद्भव ओ विकास भेल। ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम भारतक प्राचीनतम नाटक थिक। एवं प्रकारे भाषा नाटकक जड़ि मिथिलांचलमे चौदहम-पन्द्रहम शताब्दीमे जमि गेल छल।

## ॥ खेल ॥

नाच पूर्वांचलीय लोकसंस्कृतिक एकटा विशिष्ट पहिचान बनि गेल अछि नाचकें ग्रामांचलमे खेल अथवा खेला सेहो कहल जाइछ। रामकथा पर आधारित रमखेलिया[2] मोरंगक राजवंशी लोकनि एवं अररिया पूर्णियांक जनपदमे देखल गेल जे रामलीला जकां कतेको रातिमे प्रदर्शित होइछ। रमखेलियाक राम- लक्ष्मण- जानकीकें छोड़ि अभिनेता सभ सेमरक मुखौटा धारण करैत अछि। तहिना 'किस्न खेला'मे हुनक विभिन्न लीला सभकें अभिनीत कयल जाइछ। 'सामाचकेवा' ओ 'झूमर' कें सेहो खेल कहल गेल अछि जे वस्तुतः लोकनाट्य ओ लोकनृत्य थिक-

1. *सामा खेलए गेलियै हो भइया,*
   *कओने भइयाक टोल।*
   *ओहे भइया लेलन डाला छीन।*
   
   -सामा चकेवा

2. *खेलइ छै भूमरिया, कदम तरे।*
   
   -झूमर

अतः नाच ओ खेला लोकनाट्यक पर्याय थिक। नाट्यक उत्पत्ति 'क्रीडनीयक' सं मानल गेल अछि- क्रीडनीयक मिच्छामो दृश्यं श्रव्यं च यद्भवेत[3]। रमखेलियाक अन्तर्गत श्री रामजन्म, धनुषयज्ञ, रामवनगमन, जानकीहरण, राम- रावणयुद्ध आदि



एवं 'किस्न खेला'क अन्तर्गत नाग लीला, दही लीला, कदम्ब लीला, मुरली लीला, रास लीला आदि धारावाहिक रूपें प्रदर्शित होइछ। एवं प्रकारे मिथिलांचलमे लोकपम्परित नाच लोकानुरंजन एवं बहुजन सम्प्रेषणक सशक्त माध्यम बनल अछि।

हिमालय ओ गंगा एवं कौशिकी ओ गण्डकीक बीचमे अवस्थित सांस्कृतिक मिथिलांचल भारत नेपालक अन्तर्राष्ट्रिय सीमाक आर-पार पसरल अछि। आलोच्य भूभाग सांस्कृतिक दृष्टिसं बेस उर्वर बनल अछि। जनपदीय भिन्नाताक रहितो एकर आत्मा अभिन्न अछि अर्थात राजनैतिक दृष्टिसँ विखंडित मिथिलांचल साझा संस्कृतिक क्षेत्र बनल अछि। राजा सलहेस, धनपालक गाथा, सामाचकेवाक खेल, कोसी कमलाक गीत, मधुबनी जनकपुरक लोकचित्रकला, लोकदेवता दीना- भद्री, कारिख-पंजियारक कर्मभूमि, ओझा- गुनी नाम धामि-झांकी, झिझियाक नाच आदि हमरा लोकनिक साझा संस्कृतिक जीवंत उदाहरण बनल अछि। स्त्रीगणक लोकनाट्य सामाचकेवाक पृष्ठभूमि हिमालयक आर- पार अबैत जाइत पक्षीसभ पर केन्द्रित अछि।

## ॥ वर्गीकरण ॥

मांगलिक अनुष्ठान, पावनि तिहार, लोकोत्सव, मेलादिक परिस्थितिजन्य प्रक्रियासँ उद्भूत एवं सांस्कृतिक चेतनाक प्रतिमान लोकनाट्य सभकें डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन[4] निम्नलिखित उपखंड सभमे विवेचित कयने छथि-

1. गाथामूलक लोकनाट्यः लोरिक, सलहेस, नटुआ दयाल, गोपीचन, कर्तिका कुमर, सतीस बिहुला, कुमर विजोभान आदि।
2. लीलापरक लोकनाट्यः रमखेलिया, किसनखेला, नारदी, विदापत (परिजातहरण) कीर्तनियां आदि।
3. स्त्रीगणक लोकनाट्यः जट-जटिन, समाचकेवा, डोमकछ, दसरात आदि।
4. हास्य- व्यंग्यमूलक लोकनाट्य : झलकी, विपटा आदि।

स्त्रीगणक लोकनाट्यक संरचना स्त्रीगण द्वारा एवं प्रदर्शन स्त्रीगणक लेल पुरुषसं मुक्त बन्न घर आंगनमे होइछ। स्त्रीये बेष धारण करैत छथि, नृत्य ओ गान करैत छथि ओ प्रेक्षको वैह होइत छथि। विश्वक लेल एहि अद्वितीय प्रदर्शनमे पुरूष लोकनिक प्रवेश पूर्णतः निषिद्ध होइछ। पुरुष पात्रक अभिनय स्त्रीगणे करैत छथि। एहि तरहक लोकनाट्य मुक्ताकाशीय होइत अछि। सहजोपलब्ध वेशभूषा, परम्परीत कथानक, सामाजिक ओ सामयिक समस्यासं सम्वद्ध प्रसंग गीत एवं स्वाभाविक अभिनय एकर विशिष्टता मानल जाइछ।

## ॥ सामाचकेवा ॥

स्त्रीप्रधान लोकनाट्यमे सामाचकेवा आनुष्ठानिक महत्व अछि। एहिमे सामा (श्याम) ओ चकेबा (चक्रवा)क माध्यमसँ भाइ बहिनक प्रेमक कथा गाओल जाइछ। खेत- खरिहान वाग बगैचा, नदी पोखरि आदिक लगपास आनुष्ठानिक रूपें कार्तिक शुक्ल सप्तमीसँ पूर्णिमा धरि इजोरिया रातिमे सामाचकेबाक प्रस्तुति होइछ। डालामे मुख्यपात्रक रूपमे पक्षी युगल (सामाचकेवा) क माटिक बनल रंगबिरंगक मूर्ति सभक अतिरिक्त पान, सुपारी, फल-फूल ओ धानक शीशे सजाओल जाइछ। रंगभूमिमे दीप बारिकए ओहि वनपाखी सभक आमंत्रित कएल जाइछ। चुगलाक चरितें खलनायकक थिक। वैवाहिक सम्बन्धमे बाधक बनि पक्षीसभक आश्रयी बृंदावनमे आगि लगा दैत अछि। कन्याक भाइ आगिकें मिझबैत अछि एवं चुगलाकें दण्डित कयल जाइछ। पूर्णिमाक रातिमे ससमारोह सामाचकेवादिकें जलमे विसर्जन कयल जाइछ। अंतमे ओहि हिमालयी पक्षीसभकें अगिला वर्ष पुन: अयबाक लेल आमंत्रित कयल जाइछ-''सामचको सामचको आविहह हे। जोतल खेत मे बैसिहह हे।'' पर्यावरणक दृष्टि सँ सामा चकेवाक आनुष्ठानिक महत्व बढि जाइछ। सामा चकेवाक एहि संदेशकें जनसम्प्रेषणक सशक्त माध्यमे (लोकनाट्य) प्रचारित-प्रसारित कयल जा सकैछ, विशेषत: पक्षी अभयारण्य क्षेत्रमे।

मिथिलांचल बाग- तडागमे देशी विदेशी पक्षीसभ शरदऋतुमे अबैत अछि। प्रतिवर्ष क्रीडारत होइत छथि, अण्डा दैत छथि एवं संरक्षित प्रजननक बाद उडांत भेलापर बच्चा सभक संग अपन देश घुरि जाइत छथि। एहि परिप्रेक्ष्यमे पक्षी अभयारण्यक परिकल्पना सार्थक लगैत अछि। मुदा हमरालोकनि एहि पक्षीसभ कें पूर्ण अभयक वरदान नहि दए पबैत छी। ई स्थिति संवेदनीय अछि।

श्री अनिल पतंगक' नाट्य प्रस्तुतिमे सामा चकेवाक मृण्मूर्तिकें लौकिक चरितक रूपमे उभारबाक सार्थक प्रयास कयल गेल अछि। सभा संस्कृतिक प्रतीक एहि लोकनाट्यमे चक्रवाक (चकवा) भद्रदेशक राजकुमार छथि एवं श्यामा (सामा) मोरंगराज रतिनाहक पुत्री। दुनूक बीच बैबाहिक सम्बन्धमे वाधक बनैत अछि चुगला, जकरा दण्डित कयल जाइछ।

## ॥ डोमकछ ॥

स्त्रीगणक दोसर प्रिय लोकनाट्यक अछि डोमकछ। डोमकछक अर्थ होइछ डोमकथ्य अर्थात डोमक स्वांग। स्वांग लोकनाट्यक एकटा मान्य विधा थिक। पुरूष लोकनिकें बरियाती चलि जयबाक स्थितिमे बंद घर आंगनक सन्नाटाकें डोमकछक



माध्यमे तोड़ैत अछि। डोमकछक साभिनय प्रस्तुति स्त्रीगण द्वारा ओ स्त्रीगणक हेतु होइत अछि जाहिमे पुरुषक प्रवेश निषिध होइछ। एहि तरहे डोमकछक माध्यमसँ स्त्रीगण रतजग्गा करैत अछि मनोरंजन संग। कथानक घर गृहस्थी ओ दाम्पत्यसँ जोडाएल होइछ। श्रृंगार एवं हास्यक आवृत्त एहि लोकनाट्यमे पुरुष लोकनिक परोक्षमे गामघरक स्त्रीगण मुक्त भए कए नचैत ओ गबैत छथि, अभिनय करैत छथि। पुरुषक अभिनय स्त्रीगणे करैत छथि। एकर गीतात्मक संवादमे विवाहक प्रति सामाजिक अवधारणाक विवेचन होइछ। जलुआक विवाह समाजसँ चन्दा मांगिकए कयल जाइछ। घर गृहस्थीक लेल ओ बासंक काज करैत छथि। एक दिन डोमिन बांसक डगराकँ बेचबाक लेल राजाक हवेलीमे जाइत अछि आर ओतहि बिलमि जाइछ। डोमिनकँ खोजैत डोमरा हवेली जाइत अछि- ''बाबूराम बाबूराम डगरा डोमिनी हेरायल रे की।'' कोनो संधान नहि पाबि ओ फाटक तोडिकए भीतर चल जाइछ। डोमिनी भेटि गेलि।

डोमकँ परदेश चलि गेलापर डोमिनक व्यथा जटिनक व्यथा बनि जाइत अछि। एहिमे नारीक शोषण, विवाहक सामाजिक आवश्यकता, गृहस्थ जीवनक जटिलता आदिक मुक्त अभिव्यक्ति भेल अछि। एहि लोकनाट्यमे डोम दम्पति भीखो मांगिकए जलुआक विवाहक संकल्प लैत अछि- 'जलुआके करबै विवाह।' एहि तरहे एहि नाट्यमे विवाहकँ अनेक कोणसं रूपाकित घरगृहस्थीक मांगलिक परिवेशमे होइछ जखन कि सामा-चकेवामे विवाहक भूमिका मात्र बनैत अछि।

धनार्जनक लेल जखन डोम अथवा जट परदेश जाइत अछि तँ जटिन जकां डोमिनक करेज सेहो कांपि उठैत अछि। परदेशक अर्थ प्राय: मोरंगसँ ध्वनित होइत अछि। पूर्वांचलक लोकसाहित्यमे मोरंग ओ कामरूप तंत्र मंत्र जादू टोना आदिसं सम्पृक्त तिरियाराजक रूपमे चित्रित अछि। एहि टोना टापरसँ बचवाकलेल मिथिला ओ मोरंगक स्त्रीगण आश्विनक नवरात्रमे 'झिझिया'क आनुष्ठानिक नृत्य नचैत छथि'' '-डइनियांके बेटा मरल पडल, अन्हार राती झिझिया।' डोमकछ जकां नेपाली समाजमे रत्यौली सन स्त्री प्रधान लोक नाट्य परम्परित अछि।

## ॥ जट - जटिन॥

सांस्कृतिक मिथिलांचलक स्त्रीगणक सर्वाधिक लोकप्रिय चर्चित ओ विवेचित लोकनाट्य थिक जट-जटिन। डा. जगदीशचन्द्र माथुर' जटजटिन के पूर्णत स्त्री गणक मनोरंजन एवं डा. श्याम परमार गीतात्मक लघु प्रहसन' कहने छथि। मुदा ई मात्र लोकानुरंजक प्रहसन नहि अपितु गृहस्थ जीवनक संगति-विसंगतिक नृत्य ओ गीतात्मक अलबम बनल अछि। एहिमे एक दिस तप्त धरतीक तापमुक्तिक लेल

मेघराज इन्द्रकें समर्पित स्तुति गीतमे जनजीवनक करुणा व्याप्त अछि तँ दोसर दिस एहिमे गृहस्थ जीवनक राग उपरागक अभिव्यंजना भेल अछि। जट-जटिनक संग एकटा लौकिक आचार सम्बद्ध अछि जे वैदिक दृष्टिकल्पसँ सूत्रबद्ध अछि। एहि तरहें वैदिक देवता इन्द्र वैदिक आचार वृष्टिकल्प ओ लौकिक गृहस्थ जीवनक संगे लोकानुरंजनक रागात्मक एकात्मता उल्लेखनीय अछि। प्रकारांतरसँ जट-जटिनमे शास्त्र ओ लोकक समानांतरता समन्वित भेल अछि।

'जट-जटिन' नृत्यगीतसँ भरल एक एहन सांस्कृतिक अनुष्ठान अछि, जकर आयोजन मुख्यत: वर्षाक हेतु होइत अछि। साओन- भादोमे कहियो काल पानि नहि पड़ि धानमे रोग लागि जाइत अछि, पीअर होइत सुखैत जाइछ, खेतमे दरारि फाटि जाइछ, सन अवस्था अएलापर आकाशक भरमे खेती करबा लेल विवश कृषक परिवार, आकाशमे चन्द्रमाक गोल वृत्तमे अपन पूर्खा सभक बैठकक अनुमान करैत इन्द्रसँ पानि देबाक अनुरोध करैत कल्पनामे लीन रहैत अछि तँ ओम्हर महिला सभ लोकगीतक माध्यमसं इन्द्रकें पानि देबाक लेल दबाब दऽ रहल होइछ।

**(स्रोत: रागात्मक सम्बन्धको सांस्कृतिक अभिव्यक्ति: जट -जटिन- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर': 'गरिमा' मासिक- असार 2056)**

एवं प्रकारे मिथिलांचलक लोकजीवनमे स्त्रीलोकनिक लोकानुरंजनक रूपमे मुख्यत: सामा-चकेवा[8] डोमकछ[9] एवं जट-जटिन[10] मे गृहस्थ जीवनक विवाह प्रसंगके विभिन्न कोणसँ देखबाक सार्थक प्रयास भेल अछि। डोमकछ ओ जट-जटिनक प्रस्तुति बन्न घर आंगन पुरुष वर्जित परिवेशमे मुक्त रूपें होइछ। ई पुरूष समाजक विरूद्ध स्त्रीलोकनिक एकटा भावात्मक विष्फोट बनि गेल अछि। मुदा सामा-चकेवा अपन प्रकृत रूपमे भाइ-बहिनक शाश्वत प्रेमक प्रसंग गीत सभक माध्यममे घर आंगनसँ वाहर खुजल खेत खरिहाबमे जे प्रस्तुत होइछ ओहिमे पारिवारिक सौहार्दक उद्‌भावना भेल अछि। एहि सभक अतिरिक्त स्त्रीगणक लोकानुरंजन दसरातक प्रस्तुति सेहो उल्लेखनीय अछि।

तदनुसार विवाहोपरांत दस दिन धरि गामघरक स्त्रीगण द्वारा नवविवाहित वर ओ कन्याक सौभाग्य कामानाक लेल ओ अभिनीत होइछ। अन्यान्य स्त्रीप्रधान लोकनाट्य मे पुरूष पात्र सभक अभिनयो वैह लोकनि करैत छथि। एहिमे नयना-योगिन, घसकट्टी, भंडफोरी, पचीसी अथवा कौड़ी खेलनाइ आदिक प्रसंगाभिव्यक्ति भेल अछि। विवाहोपरांत एहि लोक नाट्यमे लोकाचारक अलावा कन्याक सुख सौभाग्यक कामना कयल जाइछ।

*आइ सेनूर काजर सोन सोहाग*
*जुग जुग बढौनि कनियाकें अहिवात।*





# ।। जट - जटिन ।।

## जट- जटिनक मंगलाचरणः इन्द्रक स्तुति

जेठ-अषाढक तपैत दिन मे जखन ग्रीष्मातपसँ जरैत धरतीपर मेघ स्वतः नहि उतरैत अछि तँ प्रायः पूर्णिमाक इजोरिया रातिमे मिथिलांचलक घर आंगनक सीमित मुदा मुक्त रंगभूमिमे एहिठामक स्त्रीगणद्वारा मेघकेँ बरसबाक हेतु मेघराज इन्द्र सँ प्रार्थना कयल जाइछ-

*बरसहु बरसहु इन्नर देवता*
*पानी बिनु पड़ल अकाले हो राम।*
*चौर सुखलै चांचर सुखलै*
*सुखि गेल भइयाके जिराते हो लाल*
*चमराके अंगनामे छापर छुपर पनिया*
*ओहिमे नेहाय छथि बभना पुजारी*
*धोतियो ने भीजलै जनौओ ने भीजलै*
*रचि रचि तिलक लगवै हो राम*
*भीजले तीतले हवेलिया ढुकलै*
*बहुआ लेलक लुलुआइये हो राम।*
*दया नहि लागइ छौ हे इन्नर लोक*
*पानी बिनु पडल अकाल हो राम*
*दैवा पानी रे बिनु ना।*

मुदा नेपाल तराइमे कतहु-कतहु महादेव ओ पार्वतीकेँ सम्बोधित मेघ बरसाएबाक हेतु आमंत्रित कयल जाइछ[11]। राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' नेपालक तराइ क्षेत्रमे लोक प्रचलित शिव बनल बालकक नेतृत्वमे एकटा दल घरे घरे नारा लगबैत जाइछ, कहने छथि।

*हर हर महादेव। पानी देउ।*
*अलि कति पुगेन। बढता देउ।।*

एहि याचनामे लोकक अधिकार मुखरित भेल अछि। गृहिणी लोकनि दलकें दूबि, अछत ओ चाउर दए कए शिव बनल बालकक माथ पर बेसी पानि ढारि दैत अछि। विश्वास अछि जे जतेक पानि शिवक माथ पर ढारल जयतनि ततेक वर्षा होयत। मुदा लोकमे पसरल सामाजिक विषमता, आर्थिक विपन्नता ओ शोषण उत्पीड़नक दृश्यांकन एहि प्रसंगमे जे भेल ओ अदभुत अछि-



*जनमाक धियापुता कल्ह मल्ह करइ छइ हो राम*
*गामको पटवरिया झुठे लिखइ छइ हे राम*
*सड़ले खेसारी बोइन तौलइ छइ हो राम*[12]।

तखन किएक नहि हो अनावृष्टि। ओहि जनपदक लोक सुखी ओ सम्पन्न रहैत अछि जाहिठाम अनाचार, उपेक्षा ओ भेदभावक स्थिति नहि हो।

एहिमे सामंत युगीन अथवा जमीदारी कालक लोकजीवनक वास्तविक चित्र अंकित अछि।

वर्षाक बिना गाम ओ बाध बनक पोखरि, चौर आदि सुखा गेल अछि। खेतक फाटल दरारिमे कृषि जीवी लोक फाटल करेजक छटपटीकेँ अनुभूति कयल जा सकैछ। सामाजिक आचार खण्डित भए गेल छैक। नैष्ठिक ब्राह्मण लोकनि पानिक अभावमे नीक जकाँ स्नानो नहि कए पबैत छथि। लाचार भए चमारक आंगनमे बांचल जलमे हुनका स्नान करए पड़लनि। नीक जकां धोतियो नहि भिजलनि, जनेउओ नहि मांजि सकलाह। घरइतिन दुतकारि देलकनि। हे इन्द्र। अहां के दयो नहि लगैत अछि। समाजमे ब्राह्मणक लेल हर जोतनाइ वर्जित मानल जाइछ। आर स्त्री लोकनि हर जोतथि? आर ओहो मे नांगट भए कए? हे इन्द्र। सभटा आचार-विचार ओ बर्जना टुटि गेल, आवो तँ बरसू।

*रांडी बभिनिया कुमारि रजपुतनिया*
*दुनू मिलि हरवा जोतै छै हो राम*
*हरबो ने लगै छै कोदारियो ने लगैछै*
*चौकि उछटि आरि लगै छै हो राम*
*हाली हाली बासू इन्नर देवता*[13]।

[illegible]-जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू,भ्रमर, 1999 ई. पृ. 66

संतप्त लोकक देवराज इन्द्रक प्रति आक्रोश विस्फोटित भए जाइछ- 'इन्नर लोकके पविती, मूसर ल के उठविती। मुसरे धारे मेघ बरसइतै हो राम।' सामाजिक संरचना ओ शोषण उत्पीडनक कारणे इन्द्र कुपित छथि-

*दैया गामक धनिक से सोभित छै गे ना*
*दैया कनही तराजू घटी सेर छै गे ना*
*एक सेर के दू सेर बनवै छै गे ना*
*दैवा रे ओकरे पापे पनियो नै होइ छै गे ना*

-'भ्रमर'- उएह

जखन धरती पर अनाचार ओ अत्याचार बढ़ैत अछि, देवलोक कुपित होइत छथि। वैज्ञानिक दृष्टिसँ जखन वन प्रातंर उपरि जाइछ, जखन पहाड़ तोड़ल जाइछ एवं भूगर्भस्थ जल स्रोतक अत्यधिक दोहन होइत अछि तखन भूकम्पक तांडव होइछ, सुनामीक आतंक मचैत अछि। पूरा जनजीवन आतंकित भए जाइछ। थरूहटक नेना भुटका सभ क्रीड़ागीतक माध्यमे इन्द्रसं वर्षाक हेतु एकटा आशाक संग प्रार्थना करैत अछि-

*झो मक्का झो। पानी बरसोअ।*
*पछिया कुम्मर आवेगा।*
*उजरा मेघ बरसावेगा।*
*भंसा घर उधियावेगा। चौन चापर भोरेगा।*
*चौकि पठा भोसावेगा। तलवा पानी लागेगा।*
*मुखार पानी लागेगा। बांस के डुबावेगा।*
*हाथी के भोसावेगा।*
*छै पानी छै। नदी मे ढेलपानी। बान्ह बान्है छै।*
*बान्ह बान्है छै। इन्नर राजा पानी बरसोअ*[14]।

– थारू लोक गीत। मौन पृ 135-36

एवं प्रकारे थरूहटक खेल भूमिमे झो मक्काक संरचना एकटा मांगलिक अनुष्ठानक रूपमे होइत अछि। तहिना एकटा थारू लोकनिक दोसर नेना गीत मे वर्षाजलक लेल अधिकार पूर्ण मांग कयल जाइछ- **कार करौती पीयर धोती। सारो माघो पानी दे। कार करौती उज्जर धोती। काले मेघा पानी दे। पानी दे गुडपानी दे। नाही त आपन नानी दे। गगरी छुछी बैल पिआसे। अरे नरैना पानी दे।''** इन्द्र पुरुषक प्रतीक आ स्त्री भूमिक । पिआसल धरतीक तृप्ति इन्द्रक धर्म मानल जाइछ। तेँ इन्द्र बरसबैत छथि मुदा धर्माराज थापाक मेरो नेपाल 'भ्रमण' क अनुसार वर्षाक हेतु शिव पार्वतीसं प्रार्थना कयल जाइछ।

मिथिलांचलक जनजीवन मुख्यत: कृषिपर आधारित अछि आर कृषि कर्म वर्षा पर निर्भर करैत अछि। जं निर्धारित काल खण्डमे वर्षा नहि भेल तँ जनजीवन त्रस्त ओ अस्त व्यस्त भए जाइछ। जट जटिनक मूल उद्देश्य अछि वर्षाक लेल इन्द्रक अभ्यर्थना एवं जनपदीय अवधारणाक अनुसार टोना टोटकाक अभिचार। इन्द्रक



स्तुतिकेँ लोक नाट्यक मंगलाचरण कहल जा सकैछ। लोकगाथाक आरंभमे जेना दिकपतिक वंदना कयल जाइछ तहिना जट-जटिनक आरंभमे मंगलाचरणक रूपमे इन्द्रक स्तुति कयल जाइछ जकर विस्तार एकरा कथासूत्रक संगे नृत्याभिनयक द्वारा कयल जाइछ। एकटा ग्राम्य जीवनक राग-उपरागक कथा गृहस्थीक धुपछांह मे ई सुखान्त रूपें सम्पादित होइछ। अत: अकालसं पीड़ित किसान, गृहस्थ ओ मजदूर सभक खेतीबारीक लेल इन्द्र भगवान सं प्रार्थना वर्षाक लेल करब मुख्य उद्देश्य अछि। एहि संगे सम्बद्ध अछि हर जोतव एवं बेगकें प्रताड़ना।

हमरा सभक सांस्कृतिक मान्यता अनुसार हमरा सभक जीवन पद्धतिकेँ नियंत्रण कएनिहार दैव अथवा राजा होइत छथि। जखन दैव आस पुरा नहि करैत छथि तँ ललना लोकनि राजा दिश तकैत अछि-

*''चलबै नेपाल दैया फोडबै कपार*
*दैया पानी रे बिनु..................।''*

(स्रोत: गरिमा 2056, 'भ्रमर')

कहबाक जरूरति नहि एखनो गामघरमे 'नेपाल राजधानी काठमाण्डुकेँ कहल जाइछ, जत्तऽ राजा रहैत छथि।

पौराणिक कथाक अनुसार एक बेर भीषण अकालक स्थिति मे मिथिलापति राजा जनककें आनुष्ठानिक रूपें हर जोतय पड़लनि। राजाकेँ हर जोतैत देखि वर्षारंभ भए गेल ओ सिराओरसं सीता उदभूत भेलीह बुद्धक जीवनकालमे राजाद्वारा कृषि उत्सवक रूपमे हलोत्कर्षण, वर्षामंगल बीजवपन आदिक प्रचलनक सूचना बौद्धसाहित्यमे प्राप्त होइछ। श्री विद्यानंद चौधरी[15]। एहि सम्बन्धमे एकटा प्रसंगोल्लेख कयने छथि। तदनुसार एक बेर मिथिलामे राजा धर्मध्वजक राजत्वकालमे अनाबृष्टिक कारणे घोर अकाल पडल छलैक। राजा अकालसँ मुक्तिक लेल आचार्य, पंडित, ज्योतिष आदिसं परामर्श कयलनि। ओ लोकनि इन्द्रक पूजा, अर्चना ओ नृत्यगीतक संगे रात्रिजागरणक सलाह देलनि। तदनुसार इन्द्रपूजा कयल गेल एवं वर्षा कें इन्द्रक प्रसादक रूपें स्वीकारल गेल। तहिना दरभंगा राजक राजकीय सूत्रक अनुसार भीषण अकालक स्थितिमे आचार्य लोकनि परामर्शनुसार महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह इन्द्र पूजाक अनुष्ठान कयलनि। इन्द्रभवनक निर्माण राजपरिसरमे भेल। दरभंगा राजक अलावा सम्बद्ध ड्योढ़ी क्षेत्र मधुबनी, राजनगर आदिमे सेहो इन्द्र पूजा आइ राजकीय प्रश्रयसँ विछिन्न भए लोक परम्परामे जीवैत अछि। इन्द्र वैदिक देवताक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। ऋग्वेदक दशम स्कंधमे इन्द्र द्वारा बृत्रासुरबधक कथा अभिव्यंजित अछि। बृतासुर वर्षाजलकेँ रोकि राखने छल। इन्द्र बृत्रासुरक बध कए जलकेँ मुक्त कराए ओकरा

धरतीपर उपलब्ध करौलनि[16]। बृत्रपर्वतांचलमे जलकेँ रोकि राखनिहारकेँ देवराज इन्द्र वज्रास्त्रसं मारि कए वर्षाजलकें जनोपलब्ध करौलनि। इन्द्रक जय जयकार भेल आर ओ (वर्षा) जल देवता रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। एहिसँ पूर्व वरुण जलक देवता छलाह। पार्वती साहित्यमे इन्द्र ओ वरुण दुनू एहिरूपमे पूजल जाय लगलाह। नेपाल राजवंशावलीक अनुसार उपत्यकामे संचित वर्षाजलकेँ बौद्ध देवता मंजुश्री कर्कोटक नागकें मारि कए मुक्त करौलनि। नेपाली कथामे दुर्भिक्षसँ मुक्तिक लेल नौ प्रमुख नागसभक पूजाक विधान कएल गेल अछि। अंत, तच्छक ओ वासुकि नागक संगे वरुण सेहो पुजाइत छथि[17]। पूजाक एवं प्रकारे इन्द्र वृष्टिजलक देवता रूपें उत्तर वैदिक कालसँ आइ धरि पुजाइत छथि। अतः 'जट-जटिन' मे मंगलाचरणक रूपमे इन्द्रस्तुतिक परिकल्पना स्वभाविक अछि। वैदिक सूक्त जकां इन्द्रास्तुतिक शब्दसभक अपन ध्वन्यात्मक महत्व छैक। मिथिलांचलमे इन्द्रपूजाक ऐतिहासिक प्रमाण रहुआ संग्राम (मधुवनी) मंदिरक गर्भगृहमे स्थापित इन्द्रक प्राचीन प्रस्तर प्रतिमा (पालयुगीन) क रूपमे उपलब्ध अछि[18]। इन्द्र ललितासनमे आसीन छथि। हुनक एक हाथ मे पाश ओ दोसरमे पुष्प धारीत अछि। प्रतिमाक पादपीठमे वाहन हाथी उत्कीर्ण अछि।

## ॥ वृष्टिकल्प ॥

वर्षाऋतुमे जखन पर्जन्य देवता बेंगपर बरिसैत छथि, तखन ओ सभ पर्जन्य देवताकें टर्र-टर्र ध्वनिसँ आभार गीत गबैत अछि। जेना वेदपाठी ब्रह्मण बटुक स्तुतिपाठ कए रहल होथि। जलमे बेंगक वैह स्थिति छैक जे जीव लोकनिक बीच ब्राह्मणक अछि प्रायः निरन्तर जलसँ सम्पृकत रहलाक कारणे एकटा लोक प्रवाद परम्परीत अछि-'ब्राह्मण ओ बेंगकें सर्दी नहि होइत अछि।' प्राचीन संस्कृत साहित्यमे वृष्टिकल्पक विधान कयल गेल अछि, जे अभिजात्य परिकल्पना थिक।

डा. हरिमोहन मिश्र 'वृष्टिकल्प ओ बेंग'[19]क अपरिहार्य सम्बंधकें रेखांकित करैत ई स्वीकार कयलनि जे बेंग एहि अभिचारित अनुष्ठानक केन्द्रबिन्दु अछि। जे. जी. फ्रेजर (गोल्डेन वाउल, भाग-1 पृ.96) क अनुसार नेपाल सहित भारत, युरोप ओ अमरीका (रेड इंडियन्स) मे वृष्टिकल्प लोक पारम्परित अछि। तदनुसार मिथिलांचलमे बेंग केँ उक्खरिमे कूटल जाइछ, मुदा तमिलनाडु ओ मध्यप्रदेशमे स्त्रीगण बेंगकेँ पकडि नव सूपमे बान्हि ओहिपर नीमक पात छीटि पानि ढारैत घरेघर घुमैत छथि। एहिठाम बेंगके मारबाक उल्लेख नहि अछि। रामपुरमे इन्द्रकेँ मनयबाक लेल मेढक-मेढकीक विवाह काराओल जाइछ। दुनूकें अलग- अलग मटकीमे राखल जाइछ। बेंगक साज सज्जा दुल्हाराजा (मेघराज) क रूपमे ओ बेंगिनक माछ (कन्या) क रूपमे कयल जाइछ। वैवाहिक प्रक्रियाक संपादनक पश्चात समारोह दुनूकें नालामे विसर्जित कए देल जाइछ। जवलपुर (मध्यप्रदेश) क करमेटा ग्रामांचलमे बेंगकेँ हरमे बान्हि स्त्रीगण नग्नस्थितिमे हर जोतैत छथि- मिण्डो दाइ पानी दे।' राजस्थानक ग्रामांचलमे गोबरक बनल इन्द्र इन्द्राणीक मूर्त्तिकेँ उलटा टांगिकए कन्यालोकनि घरे-घरे बेंगक जुलूस लए जाइछ। एहिक्रमे डा. विद्याबिन्दु सिंह[20]वृष्टिकल्पक एकटा उदाहरण कन्या लोकनि अनावृष्टिक स्थितिमे इन्द्रकें भाइक रूपें कानि- कानि कए कहैत छथि- हे भाइ वर्षादेव। अपन बहिन सभक रक्षा करू।......... नुकाछिपी छोड़ि आगाँ आउ आर पानि दिअ-

*अरे भइया बरसू।*
*नदिया ओ तलवा झुराने भइया बरसू।*
*कुइयां के पनिया ओराने भइया बरसू।*
*कोठिलाके धनमा ओराने भइया बरसू।*
*खेतवा के ढलवा झुराने भइया बरसू।*
*सावन भादो रहिया निहारल भइया बरसू।*
*धानी चुरिया को तरसायो भइया बरसू।*

लोकधारणा अछि जे इन्द्र कुमारि कन्यासभक स्तुतिसँ बेस प्रसन्न होइत छथि। ओ कन्या लोकनिक घर-परिवारक दुःस्थितिसँ चिन्तित छथि- नदी- पोखरि ओ कूपक जल सूखि गेल। कोठीक धान सठि गेल। साओन - भादो मे वर्षाक बाट तकैत- तकैत आँखि पथरा गेल आर मन हरियर चुनरीक लेल तरसि गेल। हे इन्द्र भइया। आब बरसू।

एहितरहें जट- जटिनक प्रसंगमे इन्द्र ओ बेंगक अन्तर्सम्बंध विशेष रेखांकन योग्य बनि गेल अछि किएक तँ 'बेंगक स्वरमे नाचि-नाचि वर्षा निजरूप पसरि रहल अछि।' अतः इन्द्रकेँ प्रसन्न करबाक लेल वैदिक स्तरक अलावा लौकिक स्तरपर जतेक प्रावधान कयल गेल अछि ओहिमे दोसर उल्लेखनीय प्रसंग उपचारित होइछ-रातिक अन्हारमे नग्न स्त्रीगण द्वारा हर जोतब।

ऋग्वेदक मण्डूकसूक्त (मण्डल 7, सूक्त 1-13) अनुसार किछु ब्राह्मण नदी अथवा पोखरीक भीडपर जाकऽ मण्डूक (बेंग) क प्रशंसामे ऋचाक पाठ करैत छथि। साल भरि मौनवती बनल बेंग वर्षागमनपर मेघसँ वृष्टिक हेतु प्रार्थना करैत अछि। अतः वैदिक अवधारणक अनुसार बेंग ब्राह्मण लोकनि नदीक किछेरमे जा कए मण्डूक सूक्तक पाठ करैत छथि। बेंगकें इन्द्रक दूत मानल जाइछ। समाठक शीर्षपर बान्हल बेंगक क्रंदन उक्खरिमे चोट पड़बाक क्रममे सुनाइत अछि। बेंगक क्रंदन ओ वेदपाठी ब्राह्मणक दुर्दशा देखि द्रवित भए खुव वरसि लोकजीवनकेँ तृप्त करैत छथि।

उक्खरिक पानिमे जीवित बेंग कुमारी कन्या लोकनिक द्वारा कूटल जाइछ। बेंगक मृत्योपरांत ओहि गंदा पानिकें कोनो बेसी गारि देनिहारिक घर आंगन मे फेकल जाइछ। विश्वास कयल जाइछ जे ओ जतेक गारि देतीह, ततेक वर्षा होएत। बेंग जतेक प्रताड़ित होयत, वर्षा ततेक होयत।

वृष्टिकल्पक दोसर महत्वपूर्ण आचार अछि- स्त्रीगण द्वारा हर जोतब। जट-जटिन गीतक अंत: साक्ष्य सँ सूचित अछि जे दुर्भिक्षक स्थितिमे वर्षाक हेतु मेघराज इन्द्रक प्रसन्नताक लेल रांड ब्राह्मणी ओ कुमारि राजपूतनी द्वारा नग्नावस्थामे मिलिकए हर जोतब- 'दुनू मिली हरबा जोतै छै हो राम।' ब्राह्मण आ राजपूत अभिजात्य वर्गक प्रतीक छथि। एकटा शास्त्रक ज्ञाता, दोसर खेत- पथारक स्वामी। जखन राजा द्वारा हर जोतबाक परम्परामे सामंत अथवा जमींदार लोकनि हरक मठ वर्जनाकें तोडि पकड़ि लेलनि। देवराजक लेल लज्जाक विषय मुदा लोकक लेल एकटा प्रेरणाक सूत्र बनि जाइत अछि अर्थात अनावृष्टिक स्थितिमे पूरा गामघर सम्पूर्णतामे त्रस्त अछि। इन्द्रक स्तुतिसँ लोकक स्तुति बनि जाइछ।

वृष्टिकल्पक लेल अभिचारित नग्न भए हर जोतबाक लोकानुष्ठानिक क्रिया असम, बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार आदिक अतिरिक्त नेपालक मैथिली भाषी जनपदमे अद्यापि परम्परित अछि। प्रो. भूपेन्द्र हजारिकाक[20] अनुसार असममे लोक प्रचलित स्त्रीगणक कार्तिकेय नृत्य नाट्यमे स्त्रीगण किसान ओ बैल बनि कए अमावश्याक रातिमे हुडु (उल्लू) कें डोरिमे बान्हि ओकर परिक्रमा नृत्यक पश्चात नग्न भए हर जोतबाक अभिनय करैत छथि। हर जोतबाक समय बाघक गर्जन होइत अछि। बाघ खेतमे आबि बैलकें उठाकए लए भगैत अछि। निर्वसना स्त्रीगण बान्हल उल्लूक नचैत- गबैत परिक्रमा करैत अछि। अश्लील गीत सेहो गाओल जाइछ, पुरुषसँ मुक्त अन्हरिया रातिकेँ एकांत खेतमे नृत्य, गीत ओ अभिनयक त्रिवेणी प्रवाहित होइछ। एहि लोकनाट्यमे लज्जा ओ अंहकेँ त्यागि इन्द्रक प्रसन्नताक लेल जे लोकानुरंजन अनुष्ठान कयल जाइछ, ओ सांस्कृतिक सँ परवर्ती, मिथिलांचलक वृष्टि कल्पसँ मिलैत-जुलैत अछि।

डा. विद्याविन्दु सिंहक अनुसार मध्यप्रदेशक जनपदमे असम जकां निर्वसना स्त्रीगण किसान ओ बैल बनि हर जोतबाक साभिनय उपक्रम करैत छथि। पश्चात एकटा पुरुष मुंह झापि एकलोटा पानि खेतमे राखि कए भागि जाइछ। स्त्रीगण ओकरा खेहारिकए दूर भगा दैत अछि। निविर अन्हरिया रातिमे एहि पांतिमे हुनक व्यथापूर्ण आक्रोशक अभिव्यक्ति भेल अछि-



*गगरी छुछी बैल पिआसे।*

*अरे नरयनार पानी दे।।*

एहितरहें वर्षाक लेल इन्द्रक स्तुतिक तँ वैदिक ओ लौकिक प्रावधान बनल अछि मुदा स्त्रीगण द्वारा विभिन्न जनपदमे नग्न भए हर जोतबाक साभिनय उपक्रम विशुद्ध लौकिक अभिचार थिक, जे बिहार, असम, मध्यप्रदेश आदिमे समान रूपें प्रचलित अछि। नेपालक मिथिलांचलमे सेहो आलोच्य अभिचार प्रचलित अछि जे अंधविश्वास पर आधारित अछि। एहि अंधविश्वासक जड़ि सुदूर अतीतक गर्भमे निहित अछि। ऋग्वेदमे वर्षाक लेल अनेक टोना- टोटकाक उल्लेख अछि।

ई तँ भेल सुखद लेल स्तुति, अभिचार ओ लोकानुरंजनक जट - जटिनक नृत्यगीतात्मक अभिनय। मुदा लोक जीवनमे अतिवृष्टिक अविस्थितिमे ओकरा रोकबाक सेहो अभिचार प्रचलित अछि। अनावृष्टि हो अथवा अतिवृष्टि, लोक दुनू स्थितिमे त्रस्त भए जाइछ। वर्षा बरिसैत बरिसैत सतारि लागि जयबाक स्थितिमे लोक विश्वासक अनुसार जाहि नेनाक जन्म मातृकमे भेल रहैछ, ओ जँ कोठीमे दीप लेसि देअय अथवा आंगनक बीच बरसैत मसाल गाड़ि देअए तं पानि रुकि जाइछ। मिथिलांचलमे वर्षा रोकबाक हेतु एकटा मंत्र सेहो छैक। मुदा घोर वर्षाक कामना सर्वोपरि अछि-

*करिया मेघमे मामा हो मामा, उजरा मेघमे भाय।*

*तेहन बरखा दिहऽ हो मामा, तीनू लोक दहाय।।*

मिथिलांचलक पिआसल धरती, दुर्भिक्षसँ आतंकित किसान- मजदूर, आ तपे बेआकुल नेना भुटका ओ अन्नाभावक कारणें व्यथित गिरहतिन सभकेँ वर्षाक माध्यमे तृप्ति प्रदान करैत छथि मेघराज इन्द्र। एकटा मैथिली लोककथामे राजाभोज अपन सभासदसँ जिज्ञासा कयलनि- 'राजा तँ भोज राजा आओर राजा कोन? रानी तँ राजरानी आर रानी कोन? फूल तँ गुलाब फूल आर फूल कोन?' राजा भोज राजकुमारीक उत्तरसँ बेस प्रसन्न छलाह-

*राजा तँ मेघराज, आर राजा कोन?*

*रानी तँ बेहवारी रानी, आर रानी कोन?*

*फूल तँ कपास फूल, आर फूल कोन?*

असल राजा तँ मेघ अछि जे समान रूपें समदर्शी बनि सभकें जल दैत अछि। अत: ई जनमानसक उक्ति थिक। ओ सर्वदेशीय सत्य थिक - राजा तँ मेघराजा अर्थात मेघराज। ओहि मेघराज इन्द्रकें समर्पित एहि गीतांशमे विकलताक भाव अछि, विनती अछि, काक आहवान अछि- हे वर्षाक देवता मेघराज। अहांक

दर्शनक लेल आंखि बेआकुल अछि- **हाली हुली बरिसू इन्नर देवता । पानी बिनु पड़ै छै अकाल हो राम।'** मध्य प्रदेशमे इन्द्रक स्तुति नग्न स्त्रीगणक हर जोतब, वेश बदलिकए भिक्षाटन करब, लोक देवता सप्ताजीक मूर्त्ति बैसायब आदि कतेको लौकिक अनुष्ठान एवं टोना- टापरसभ प्रचलित अछि, मिथिलांचलमे वर्षा विषयक लोकविश्वास, टोना-टापर, मंत्र, अनुष्ठाननिष्ठ उपचारादिक अध्ययन ओ अनुशीलन वैज्ञानिक दृष्टिसँ अपेक्षित अछि।

## ॥ नाट्य शिल्प ॥

जट-जटिन मिथिलांचलक सर्वाधिक लोकप्रिय, लोकानुरंजन बहुचर्चित ओ बहुविवेचित लोकधर्मी नाट्य थिक। वर्षाऋतुक पूर्वार्द्ध अथवा उत्तरार्द्धमे अनावृष्टिक स्थितिमे टोना टापर पर आधारित लौकिक अनुष्ठानक संगे जट-जटिनक राग उपरागक द्वंद्वात्मक कथा प्रसंगकेँ स्त्री लोकनि नृत्य गीत ओ अभिनयक माध्यमे बन्न घर आंगनक परिवेशमे प्रस्तुत करैत छथि। इजोरिया रातिमे अभिनीत एहि लोकनाट्यक लेल रोशनीक कोनो अलगसँ प्रबंध नहि कयल जाइछ ने मंचक प्रबंधन आर ने विशेष वेश भूषाक आवश्यकता। पुरुषोक अभिनय स्त्रीगणे करैत छथि, जखन कि समस्त लोकपरम्परित नाट्य सभमे स्त्री पात्रक अभिनय पुरुषे द्वारा सम्पादित होइछ। ई एकटा विडम्बना थिक।

जट-जटिनक प्रस्तुतिक लेल कोनो पूर्वाभ्यासक आवश्यकता नहि होइछ आर ने कोनो वाद्ययंत्रक प्रयोग कयल जाइछ। तथापि जाहि लय, ताल ओ भावभंगिमामे जट-जटिनक प्रस्तुति कयल जाइछ, ओ सहज सम्प्रेषणीय ओ लोकानुरंजन बनि जाइछ।

जट-जटिनक नाट्य रूपक विवेचनसं पूर्व ओकर प्रसंग गीतसभ लोक गीतक रूपमे विवेचित भेल अछि। राम इकबाल सिंह राकेश अपन मैथिली लोकगीत मे[23] जट-जटिनक प्रसंग गीतसभकेँ नृत्यगीतक रूपें संकलित करने छथि। मुदा अनुशीलनक पूर्वार्द्धमे जट जटिनक वेशभूषाके जाहिरूपे विन्यस्त कयलनि ओ नाटकीय अछि। कुमुदिनी (कोकाकफूल) क श्वेत हार ओ माथ पर श्वेत मुकुट धारण कयने जट एवं श्वेत फूलक माला पहिरने जटिन। डा. जयकान्त मिश्र[24] सेहो जट जटिनकेँ पुरुष ओ पुष्पहारसँ सज्जित कहने छथि। आलोच्य लोकनाट्यक नायक जट ओ नायिका जटिन रंगभूमिमे एक एकटा दलक प्रतिनिधित्व करैत अछि। प्रत्येक दलमे पांच सँ सातटा स्त्रीगण अथवा कन्या लोकनि एक दोसराक डांर ओ कान्हके बन्हने आमने-सामने गीतात्मक संवादक संगे नचैत छथि-



*जटिन: जटा जटिन रे विआहे।*

*आनू ग सिनुराक साजे*

*जटक दल: कहा पैवे कहा पैबे सिनुराक साजे।*

*मोर जटा रहतैक कुमारे।*

एहि प्रकारे जट जटिनक कथारंभ सँ पूर्व डा. माथुर जाहि प्रसंगमालाक उल्लेख कयने छथि ओकर आधार अछि पूर्णिया (मल्लडीहा) जनपदक इन्दु बाला देवी द्वारा संकलित पाठ। जट-जटिनक प्रथम महिला अध्येता एवं पुरुषक लेल वर्जित क्षेत्रक कारणे हुनक पाठकें अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीय मानल जा सकैछ। तदनुसार लोकनाट्यक पूर्व रंगक रूपमे झूमरकें कहल गेल अछि। गीतात्मक संवाद, सहगान, विषय वस्तुक उपस्थपना आदिसं नाट्य प्रस्तुतिक भूमिका बनि जाइछ एवं प्रस्तुति कर्मी ओ प्रेक्षक लोकनिक मूड बनि जाइछ।

तदुपरान्त कथानकक श्री गणेश होइछ। कथानककें निम्नलिखित प्रसंगमे वर्गीकृति कयल गेल अछि।

1. मंगनी प्रसंग
2. विवाह प्रसंग
3. गौना प्रसंग
4. नव दम्पति प्रसंग
5. वियोग प्रसंग
6. मंगल कामना।

**मंगनी प्रसंग:** जटक माय जटिनकेँ अपन पुतोहु बनयबाक प्रस्ताव लए कए जटिनक मायसं अनुरोध करैत अछि। वार्तालाप दुनू समधिनक मध्य गीतात्मक संवादक माध्यमे होइछ। मुदा अनेकानेक जिज्ञासा ओ समाधानक पश्चातो बात नहि बनैत देखि अंतमे जटक माय नौ सय बरियात, मसक बाजा ओ रंग विरंगक गहना-जेवरक प्रलोभन दैत अछि। प्रश्नोत्तरीमे नाटकीयता स्वाभाविक रूपें बनल अछि।

**विवाह प्रसंग:** जट-जटिनमे विवाहक एकटा झलकी देखाओल जाइछ बंका भकुलीक विवाह। बंका ओ भकुलीक दल एक तरह जट-जटिनक विवाहक (प्रस्तावना) भूमिका तेयार करैत अछि। भकुलीक संग विवाह करबाक हो तँ डालाक सौगातक प्रबन्ध कए जाय- **'कहां रे पयवै कहां रे पयबै डलवाके साजे। मोर वंका रहतै रे कुमार।'**

**गौना प्रसंग:** विवाहक बाद जटिनक गौनाक हेतु ससुराइरसँ ब्राम्हण जाइत अछि हजाम जाइत अछि, ससुर जाइत छथि, भैंसुर जाइत छथि, देओर जाइत छथि मुदा ओ, किछु कारणे नहि जाइत अछि। एहि हास्यक समानांतरे भकुली सेहो नहि जाइत अछि। मुदा जखन कांच बांसक बांसुरिक (जटिन) बजबैया स्वयं स्वामी जट अबैत छथि तं ओ हुलसि कए संग जयबाक लेल तैयार भए जाइछ–

*स्वामी के संग हमहूं जयवै गे मैना, जयबै गे मैना*

*मैना राहे जे बाटे पनमा खिलैते गे मैना*

*मैना राहे जे बाटे बेनिया डोलैते गे मैना*

जटिन सासुर पहुँचि जटक साधारण घर दुआरि देखि कए ओहिमे प्रवेश नहि करैत अछि– **ऐसन मलिन घरमे पैर नहि राखव। हमर वाप दरोगाक घरक दुआरि सन बनबाउ।**

**नव दम्पति प्रसंग** : जट-जटिनक नव दाम्पत्यमे अनेक नाटकीय मोड अबैत अछि। रहस्य रोमांच, दाम्पत्य सुख, राग उपराग, नमि कए चलब नहि चलबक ओलहन, खेती पथारीक चर्च, वस्त्राभूषणक अभिलाषा आदि।

*जट : ढुलचल दिहुली ढुलचल*

*जटिन : कहा ढुलव हमे दिदिया*

*जट : सोनार दोकनवा ढुल चल*

*जटिन : सोनारके पूत हमरा मारलक*

*जट : कोने गुनहिए मारलक*

*जटिन : टीका छुऐतै मारलक*

*जट : मारवौ रे सोनरा, तोहरे सोनारीन*

*हमरा दिहुलीके मारलक*

**वियोग प्रसंग:** जट अपन नव विवाहिताक लेल गहना जेवर खरीदबाक हेतु पूरब देश जाय चाहैत अछि। जटिन कहैत अछि हम गहना-जेवरक अभिलाषा त्यागैत छी। अहाँ पूरब देश नहि जाउ। ओहि ठामक हवा पानि खराब छैक। हमरा हंसुली नहि चाही। अहाँ केवल हमरा आंखिक आगां ठाढ़ धरि रहू–

*हंसुली त हे जटा तरवाक धूर*

*घरही रहू जटा, नयने हजूर।*



*लेल धोती रंगाकए रखलनि।*

*मुदा ओ- धोतिया तेजिके नोकरिये गेलै ना।*

जटिन ओकर खोजमे घरसँ बहराइत छथि। घाट बाटमे लोक ओकरा प्रलोभन दैत जटक आस भरोस छोडि देवाक सलाह दैत अछि। मुदा जटिन सभकेँ दुतकारि दैत छनि- **'हेरे सोनरवा भाय। रे अगिया लगैवो तोरो हंसुलिया।'** बारह वर्ष धरि हम अपन सुन्नर जटक हेतु अंचरा बान्धि कए रहब- **'तोहरो से सुन्नर हमरो जटहवा, रहबै जटेके आस।'**

जटिन आगा झिमनापुर घाट आबि कए मलाहसँ निहोरा करैत अछि जे हमरा नाहसँ घाट पार कराए दिअ। हम अहाँके खेबामे लोटा इनाम देव। खेवामे पाठी इनाम देब। मुदा मलाह जटिनक सभटा प्रस्तावकेँ टारि दैत अछि- **'ने लेबो हम खेवा नेवा ने लेवो इनाम। बहिनी बटोहिनी गे, खोजि ले दोसर घटवार।'** जटिन ओ मलाहक संवाद बड़ रोचक अछि। एहिमे भावनात्मक मोड़ तखन अबैत छैक जखन ओ हारि पछारि कए मलाह सँ निवेदन करैत अछि-'हम जटक वियोगे नइहर जा रहल छी। हमरा पार उतारि दिअ–

*कल जोडै छी नैहरा जाइ छी*

*जटासे खाय के मार।*

*बड दुखाइल छी गोर पड़ै छी*

*नइया लगा दे पार।।*

जटिनक दुखसँ द्रवित मलाह कहैत अछि- **'तोरा देखि कए माया लागै, जिया फाटे हमार। बहिनी गे जे कइले से नीक नै कइले, करि दियौ नैया पार।'** एहि प्रसंगक बाद क्रमशः घटैत घटनाक्रमसं नाटकीयता बढि जाइत अछि। झिमनापुर घाटक चर्च डा. रामदेव झा[25] सेहो कयने छथि-**'नैया लगा दे झिमनापुरक घाट'** मुदा ओ झिमनापुरक दिग्देश नहि सूचित कए सकलाह जाहिसँ जट-जटिनक नाट्याभिनयक क्षेत्रकेँ रेखांकित कयल जा सकैछ। ओ घाट नामी छैक डा. माथुरक पाठमे झिंगनापुर छैक। एकटा दोसर पाठमे घाटक दोसर नाम हरदासपुर छैक मुदा प्रसिद्धी झिमनापुरक छैक।

जट अंततः गाम घुरि अबैत अछि। मुदा घर आंगनक दशादेखि बड दुखी होइत अछि। आंगनमे दुभि जनमि गेल छैक। पलंगपर मकड़ीक जाल ओ भनसाघर ठण्डाएल। घर-आंगनक शून्यताकेँ देखि ओ दुखित छल–

*अंगनमो दुभिया जनमि गेल*
*पलंगापर मकडी बिआय गेल गे माइ जटिन बिनु*

ओम्हर जटिनक खोजमे जट गामेगाम नगरे नगर घुमि रहल अछि। ओकर मनोकाशमे अपन अतीतक सुख समृद्धिक हास घुमि रहल छैक-

*हाथी परके हौदा विकाय गेल गे जटिन तोरे बिनु*
*तोरे बिनु महल उदास भेल गे जटिन तोरे बिनु।*

नायिकाक वियोगजन्य परिस्थितिक चित्रण लोक विस्तृत कैनवासपर हृदयग्राही रूपमे भेल अछि। मुदा नायकक वियोग जनित परिवेशक चित्रण मार्मिक अछि। एहि परिस्थिति ओ परिवेशकें नाटकीय ढंगसँ परसल गेल अछि।

जटिनक खोजमे विरहाकुल जट नाना रूप धारण कए बहराइत अछि। कखनो दही बेचनिहारि ग्वालिनक रूपमे, कखनो माछ बेचनिहारि मलाहिनक रूपमे तँ कखनो चूड़ी बेचनिहारी चूड़ीहारिनक रूपमे। मलाहिनक रूपमे ग्राम्याक संग अभिनयक एकटा भंगिमा द्रष्टव्य अछि-

*जट (मलाहिनक रूपमे) - ससुरे भैंसुरे मोरा जाल बुनैना*

*असकर बलमुआ मोरा माछ मारै ना*

*माछ ले हे माछ ले हे गहिकी बेटी माछ लेहे*

***ग्रामीण स्त्रीगण:*** *आहे कौने मछरिया करे गोढिन हे।*

*जट: आहे रेहुआ मछरिया करे गोढिन हे।*

***ग्रामीण स्त्रीगण:*** *आहे गेहूमा के कै खूट माछ देबै हे।*

*जट: आहे गेहुमा के तीन खूट माछ देवअ हे।*

***ग्रामीण स्त्रीगण:*** *तोर मछरी बनबै नहि जानियौ*
*धुआए नहि जानियौ रान्है नै जानियौ*
*खवैयाक खियाबै नहि जानियौ*
*धिया पुताकेँ परबौधै नहि जानिअय।*

**मंगल प्रसंग:** अंत मे जट जटिनकेँ मनाकए घर आनैत अछि एवं प्रकारें मंगल भावनाक संग नाट्यक सुखद समापन होइत अछि।

एहि तरहे स्त्रीगणक लोकनाट्य जट-जटिनक पूर्वार्द्धमे विवाह भूमिका बनैत अछि। मध्यार्द्धमे दाम्पत्य जीवन मे राग उपरागक उत्कर्ष देखना जाइछ एवं उतरार्द्धमे जट-जटिनक मिलनसँ सुखांतक स्थिति बनैत अछि।





## ॥ जट-जटिनक स्थापत्य ॥

'जट-जटिन' मिथिलांचलक स्त्रीगण द्वारा अभिनीत जनपदीय लोक नाट्य थिक। कथानक विभिन्न प्रसंग सभसँ आवृत्त रहैत अछि। संवाद प्रश्नोत्तर शैलीमे पद्यात्मक एवं भाषा मैथिली अछि। प्रश्नोत्तर शैलीक पूर्वाभास यम- यमी, यक्ष- युधिष्ठिर आदिक संवादमे देखना जाइछ। देशी राग भासक प्रधानता होइछ। लयात्मक गीतसँ समन्वित पात्राभिनयकेँ नृत्य एकटा गीत ओ भंगिमा प्रदान करैत अछि। एहिमे गृहस्थ जीवनक जटिलताकेँ उभारल गेल अछि, मुदा समाधान ग्राम्य परिवेशमे कयल जाइछ। घर आंगनक अनौपचारिक रंगभूमिमे सहजोपलब्ध ग्राम्य वेशभूषामे लोकानुरंजन रूपमे प्रदर्शित कयल जाइछ। अभिनय रूढ़िगत एवं प्रसंग परम्परित होइछ।

जट-जटिन मे अंक विभाजन अथवा दृश्य विधान प्रसंगक क्रमे होइछ। पूर्व रंगक रूपमे सामूहिक लोकनृत्य झूमरक प्रदर्शन एवं मंगलाचरणक रूपमे इन्द्रक स्तुति कयल जाइछ। झूमरक नर्तनमे कोनो वाद्यक प्रयोग नहि होइछ। अत: वाद्याधारित संगीतक अभावकेँ लयात्मक गीत ओ नृत्यसँ पूरा कयल जाइछ। अत: लोकानुरंजनक दृष्टिमे जट-जटिन एकटा सहजोपलब्ध परम्परीत लोकनाट्य थिक जाहिसँ पुरुषवर्ग पूर्णत: वंचित रहैत छथि। किएक तँ एहिमे पुरुष वर्गक पारिवारिक अनुशासनक प्रति मुक्त अभिव्यक्ति संभवत: हुनका नीक नहि लगनि। जट-जटिनमे ने तँ सूत्रधार ओ नटीक अथवा विपटा विदूषकक कोनो आवश्यकता होइछ। मुदा विपटाक हास्यमूलक अभिनय ओ व्यंग्योक्तिक साक्षात प्रकारांतरसँ बंका ओ भकुलीक एवं ग्वालिन ओ मलाहिनक रूपमे जटक प्रसंग अभिनयकेँ लेल जा सकैछ। ओना तँ सम्पूर्ण नाट्याभिनय स्वरूपगत विद्रुपताक प्रतीक बनि गेल अछि, किएक तँ पुरूषपात्रक अभिनय स्त्रीगण करैत छथि।

डा. ताराकान्त मिश्र[26] मिथिलांचलक लोकनाट्यक निम्नलिखित विशेषता सभक उल्लेख कयने छथि- ''कथानक संक्षिप्त गीति शैलीमे कथोपकथन, मंच निरपेक्ष, क्षेत्रीय भाषाक प्रभुत्व प्राय: सुखांत ओ संयोगांत, एवं सम्पूर्ण नाट्याभिनय पुरुष अथवा स्त्री लोकनि द्वारा प्रदर्शित। आधुनिक नागर मंच पर आब जट-जटिनकेँ

स्त्री ओ पुरुष पात्र द्वारा सम्मिलित रूपे प्रदर्शनक साहसिक प्रयोग नवतरंग (बेगूसराय) द्वारा श्री अनिल पतंगक निर्देशनमे एकटा रेकर्ड बनि गेल छथि।'' डा. जगदीशचन्द्र माथुर एकरा लोकगीत ओ लोक नाट्यक बीचक अवस्था मानैत छथि। अंग्रेजीमे एकरा फोक प्ले कसंज्ञा देल जा सकैछ अर्थात एकटा एहन प्रदर्शन जाहिमे बिना कोनो विशेष तैयारीक ग्राम्य समाज अपन जीवनानुभूतिक परिवेशमे सामुदायिक उत्सवक रूपमे रंग प्रदर्शन करैत अछि। जट-जटिन[27] पूर्णतया स्त्री लोकनिक मनोरंजन थिका। एहिमे स्त्रीगणे वेश धारण करैत छथि, गान ओ नृत्य करैत छथि, आर प्रेक्षको स्त्रीगणे होइछ जाहिमे पुरुषक प्रवेश वर्जित मानल जाइछ। एवं प्रकारे दाम्पत्य जीवनक एकटा मार्मिक पक्ष उभरैत अछि जे पौराणिक कथा अथवा प्रेमपरक कथा-सभ पर आधारित नाट्याभिनयमे नहि पाओल जाइछ।

डा. ताराकान्त मिश्रक अनुसार मिथिलांचलक अति प्रसद्धि ओ लोकप्रिय नाट्यक नामकरण प्रमुख पात्र-पात्री अथवा नायक ओ नायिकाक नामपर होइत अछि। जट-जटिनक नामकरण नायक जट ओ नायिका जटिनक नामपर भेल अछि।

जट-जटिन वस्तुत: एकटा गीति नाट्य थिक। एकर संवाद गीतात्मक अछि। नाट्यक मुख्य पात्र जट ओ जटिन पहिने प्रेमी-प्रेमिका एवं बादमे पति-पत्निक रूपमे बन्हि जाइत छथि। जट पुरुष प्रधान समाज एवं वर्चस्वक कारणे जटिनकेँ लबिकए चलबाक सीख दैत अछि। मुदा बाबाक दुलारि बेटी जटिन अपन ग्राम्य अल्हड़ताक कारणे एहि आदेशकेँ सहजे स्वीकार नहि कए पबैत छथि किन्तु कालांतरमे ओ जटक हाथक कठपुतरी बनि जाइछ। जट-जटिन अनाम नायक-नायिकाक जाति बोधक प्रतीक थिक।

जट अर्थात जाट निसंदेह कृषिजीवी जातिक छथि जकर सघन आबादी पंजाब, हरियाणा ओ उत्तरप्रदेशक किछु भागमे अछि। श्री मुनीश्वर राय मुनीश[28] जट-जटिनकेँ पंजाबक प्रेमाख्यान कहने छथि जे सोहिनी महिवाल, हीर रांझा आदिक प्रेमक लीला भूमि रहल अछि। ओ 'बज्जिकांचल' मे कहैत छथि जाटक एकटा दल एहि भूभागमे मध्यकालीन परिस्थिति मे अंतरित भेल छल। हुनके संगे ई प्रेमपरक लोकनाट्यक परम्परा आयल। मध्यकालीन परिवेशमे राजनैतिक अस्थिरताक कारणे अनेको राजवंश आ हुनक चर अनुचर एहि भूभागमे आबि एकटा सांस्कृतिक तरंगकेँ उत्तेजना प्रदान कयलनि। जट जटिन ओहिमेसं एकटा नाट्य विधा थिक मुदा सम्पूर्ण नाट्यक परिवेश मिथिलाक थिक, जाहिमे ओ रचि बसि गेल छथि। अर्थात जट जटिनक रूप जे आइ भेटि रहल अछि, परम्परित अछि। ओहिमे मिथलांचलक



माटि पानिक गंध अछि। फोक डांस ऑफ इण्डियामे एकरा प्रेम कथाधारित नृत्य नाट्य कहल गेल अछि। एहिमे जट-जटिनक प्रेम कथाक उद्घाटन बड़ नैसर्गिक ढंगसँ भेल अछि, गृहस्थ जीवनक परिवेशमे।

डा. नरनारायण राय[29] जट-जटिनकेँ नाट्य रूपमे स्वीकार कयने छथि। ओ स्वीकारने छथि। आब बिहारक किछु मंच पर सार्वजनिक रूपमे जट-जटिनक कलात्मक प्रदर्शन भए रहल अछि जाहिसँ मिथिलांचल एवं बाहरोक शोधकर्मीकेँ एहि नाट्यक विशेष जानकारी उपलब्ध भेलैक। श्री अनिल पतंग जट-जटिनक परम्परित कथा सूत्रकेँ पकडि नागर मंचपर प्राय: छह सौ वयालिस प्रदर्शन कए ई साबित कए देने छथि जे आधुनिक दृष्टि सम्पन्न रंगकर्मी ओकरा आधुनिक परिवेशमे प्रासंगिक बना कए ओकरा बेस जीवंत बना सकैत छथि एवं दर्शकक दृष्टि ओ भगिमाकेँ बदलि सकैत छथि। जखन हम जट-जटिनकेँ एक दिस वन आंगनक पुरुष वर्जित रंगभूमिकेँ स्त्रिगण द्वारा प्रदर्शित लोक नाट्यक रूपमे देखै छी तँ दोसर दिस खुजल मंच पर ओकरा स्त्री ओ पुरुष पात्रक नृत्याभिनयक संग मंचित देखैत छी। एहि तरंहें लोकमंचक जट-जटिनके नागर मंचक जट-जटिनमे बहुतरास आधुनिक रंगकर्म सम्बद्ध भए जाइछ। मंच प्रकाश ओ ध्वनि, बेश-विन्यास पुरुष ओ स्त्रीपात्रक स्वाभाविक सहभागिता आदि।

श्री अनिल पतंगक कहब छनि- कखनो काल लोक रंगमंच एतेक समृद्ध होमय लगैत अछि जाहिसँ ओ अपन परम्परा ओ सीमाकेँ अतिक्रमण कए नागरमंचक सीमामे प्रवेश कए जाइछ[30]। आइ तेजीसँ बदलैत एहि युगमे परम्पराक सूत्रकेँ पकड़ि राखबाक प्रयास होबक चाही। एहि संदर्भ मे ई संतोषक विषय जे 'जट-जटिन' ओ 'सामाचकेवा' लोकमंचकें छोडि नागरमंचपर प्रतिष्ठित भए गेल अछि। लोरिक ओ सलहेस सेहो मंचस्थ भेल अछि।

श्री श्याम सुन्दर शशि[31]क मतानुसारे आलोच्य लोकनाट्यक सम्बंध स्त्री गणसँ रहलाक कारणे ओकर मूल रूप अद्यावधि वाधित नहि भेल अछि। सम्प्रति तत्कालीन मिथिलांचल ओ नेपाल तराइमे जट-जटिन, सामाचकेवा, डोमकछ आदिक अस्तित्व देखना जाइछ। एहि नाट्याख्यानक मूलमे जट-जटिन, अछि जकर उद्भव ओ विस्तार वीरभद्रसँ मानल गेल अछि। मेरठ, रोहिल खण्ड आदि हिनक मूल निवास स्थल मानल जाइछ। चित्तौड़क गद्दीपर गोरीक आधिपत्यक पश्चात जाट लोकनिक एकटा दल मुज्जफ्फरपुर ओ दोसर नेपाल दिस प्रवर्जित भेल। श्री मुनिश मिथिलांचलक सीमांत क्षेत्र धमौन (समस्तीपुर) मे सघन रूपसँ आवासित यादव लोकनिक सम्बन्ध

जाटसँ मानने छथि। दीनाभद्रीक गाथामे गुलमी जाट एकटा प्रखर पात्र छथि। अत: जट कोनो नव नहि।

जट- जटिनक उत्पत्ति सम्बन्धी एकटा कथा राजेश्वर झा अपन जट- जटिन (अक्टूवर 1971 ई.) मे एहि तरहें देने छथिन।

दक्ष प्रजापतिक यज्ञमे जखन सतीदेवी अपनाकेँ उत्सर्ग कऽ लेलनि तखन क्रोधसँ भेर भेल महादेव अपन जटाकें पृथ्वीपर बजारलनि जाहिसँ एकटा पराक्रमी पुरुषक उत्पत्ति भेल। ओ जखन आदेश मंगलक त दक्ष प्रजापति यज्ञकें भंग करबाक निर्देश देलखिनि आ ओ यज्ञकें तहस- नहस कऽ देलक। ओ वीरभद्रक नामसँ चिन्हल गेल। महादेवक जटासँ उत्पन्न हएबाक कारणें ओकरा 'जट' कहल गेलै जे वादमे 'जट' जातिक उत्पतिक कारण बनल'।

**बन्न घर आंगनक रंगभूमि:** जट-जटिनक प्रस्तुतिक लेल कोनो रंगमंचक औपचारीक विधान नहि अछि। जखन कर्ममय जगतक कोलाहल शांत भए जाइछ ओ गामघरक लेल निद्रालस्यमे लीन भए जाइछ, तखन निस्तब्ध निशीथमे वायुमंडलकेँ स्पंदित करैत पुरुष लोकनिसँ मुक्त मिथिलांचलक घर-आंगनमे मेंघक आवाहन शुरू भए जाइछ। आर जखन वयसें उर्ज्वसित स्त्रीगण गीत, नृत्य ओ अभिनयक त्रिवेणी जट जटिनक माध्यमे प्रवाहित करए लगैछ, तखन मेघराज इन्द्रकें धरतीक आंचरके भिजयवाक हेतु जल बिनु तृषित लोकक मनप्राण आ खेतसभमे उतरबाक लेल वाध्य होमए पड़ैत अछि। राम इकवाल सिंह राकेशक मतानुसार एहिमे नृत्यगीत ओ अभिनयक अपूर्व सामंजस्य भेल अछि[32]।

ग्रामांचलक बन्न घर-आंगनमे अनौपचारिक रूपे सृजित रंगभूमि मुक्ताकाशीय होइत अछि। खुजल आंगनक केन्द्रीय स्थल रंगभूमिक काजकरैत अछि, जाहिमे चारूदिस महिला लोकनि प्रेक्षकक रूपमे बैसल रहैत छथि। वैह रंगभूमि ओ वैह प्रेक्षालय। मुक्ताकाशसँ रंगभूमिमे बरिसैत इजोरिया आर दुधिया इजोतमे आदिवासी महिला लोकनि जकाँ लयात्मक पदचाप ओ गीतक धुनपर आमने सामने लहराइत दूटा दल- जटक दल ओ जटिनक दल। विवाहक पृष्ठभूमिकेँ सिरजैत स्त्रीगण, खाहे ओ पुरुषवेशिनी महिला लोकनिक जटक दल हो अथवा जटिनक। एहि दुनू दलक स्त्रीगणकें बिकछयबाक लेल जटपक्षक स्त्रीपात्र लोकनि फूलक माला पहिरने रहैत अछि। दलक नेता (नाट्य) जटक माथपर उज्जर फूलक मुकुट होइत अछि। आर वेशभूषा सहजोपलब्ध ओ सामान्य होइछ। दुनू दलमे आठ-आठ दस-दस गोटेक



स्त्रीगण रहैत अछि। प्रस्तुतिमे बाजागाजाक कोनो ओरियान नहि होइछ। किएक तँ समाजमे हुनका लोकनिकेँ सामान्यत: गयनाइ- बजनाइ ओ नचनाइ वर्जित अछि, तथापि बन्न घर आंगनमे हुनका ई छूट छनि, किएक तँ ओहिमे कोनो रूपें पुरुष लोकनिक उपस्थिति वर्जित रहैत अछि।

मुदा श्री अनिल पतंगक प्रस्तुतिमे33 रंगभूमि बनाओल गेल अछि। डाक बंगलाक प्रांगण, जाहिठाम एकटा विदेशी शोधकर्त्ता फ्रोजर ओ झाजीक संवादक संगे जट-जटिन 'प्रस्तावना' क भावभूमि तैयार होइछ। पृष्ठभूमिमे जट-जटिनक गीतलहरी अनुगूंजित होइछ। प्रकाश ओ ध्वनिक विशेष संयोजनसँ कथावाचक (सूत्रधार अथवा नायक) क वाचनसँ कथाक्रम आगाँ बढैत अछि आर बीच- बीचमे प्रासंगिक नृत्यगीतक संग जट-जटिनकेँ नागर मंचपर प्रस्तुति एकटा विशिष्ट आकर्षण उत्पन्न करबामे समर्थ होइछ। नागर प्रेक्षककेँ लोकनाट्यक अभिनव शैलीक आस्वादन भेटैत छनि।

कृषि कर्मक लेल उपयुक्त मास आषाढ, साओन एवं भादो होइछ। मुदा अनावृष्टिक कारणे एकर प्रस्तुति प्राय: आश्विन ओ कार्तिक मासमे होइछ। मुदा ग्राम्य जीवनक मनोकाशमे एकर भावात्मक भूमिका जेठ- अषाढे बनि जाइछ। अनावृष्टिक आशंकासँ- जेठ हे सखी हेठ वर्षा....... जट-जटिनक आरंभमे मेघराज इन्द्रक स्तुतिकेँ श्री शशि मंगलाचरण सदृश्य मानने छथि। मिथिलांचलमे शताब्दियोसँ वर्षाकाल मे कृषि कर्मपर जीवन यापन कय निहारि जन साधारणक लेल मेघक प्रतीक्षामे आंखि पथरा जाइत छनि। ओ तखन बेस आतंकित भए जाइत छथि जखन-**आदि ने बरसय आद्रा, अंत ने बरसइ हस्त। कहहि डाक सुनु भड्डरी पिसाने भेल गिरहस्त**[34]। गामक जतेक लोकदेवी- देवता छथि हुनक वार्षिक पूजाक एकमात्र उद्देश्य होइछ- सफल कृषि ओ भरल पुरल खेत- खरिहान।

## जट-जटिनक मूलकथा

एहि लोकनाट्यक मूल कथा दाम्पत्य केन्द्रित अछि। कथानकक आरंभ मे नायक जट ओ नायिका जटिन प्रेमी- प्रेमिका रहैछ जे पाछा विवाह सूत्रमे बन्हि कए राग- उपराग आ पारिवारीक नोंक झोकमे ओझराइत अन्तत: सुखद सामजस्यक संगे कथाक अंत होइछ। घर आंगनक आंतरिक परिवेश अनौपचारिक रूपें स्वाभाविक दृश्य विधानक पूर्ति करैत अछि, जे अपेक्षाकृत बेस भखानुकूल आ सम्प्रेषणीय बनि जाइछ। मुदा नागरमंचपर सायास प्रस्तुतिक कारणे अपेक्षाकृत कम प्रभावोत्पादक होइछ।

**पात्र सभक चारित्रिक विधानः** जट-जटिनक मुख्य पात्र छथि जट ओ जटिन। आनुषंगिक पात्र सभमे अबैत छथि- अंका बंका ओ भकुली (जट-जटिनक प्रतिरूप) नाह खेनिहार मलाह, मोसाफिर, वैद्य ओ जटक पुत्र, रघुदास बैद्य ओ रघुदासक प्रसंग मूल कथाक प्रायःप्रक्षिप्त अंश थिक तथापि रघुदास जट-जटिनक दाम्पत्य प्रेमक प्रतीक छथि, जनिक प्रति वात्सल्य भावक देखना जाइछ-

*रघुदासक अंगा टोपी*

*तोहरे देवऊ रे वैदा, तोहरे दवऊ रे वैदा*

*रघु दासके दही ने जिआय।*

**उद्देश्यः** जट जटिनक मुख्य उद्देश्य अछि- वर्षाक हेतु इन्द्रक अभ्यर्थना। लौकिक अभिचार एवं स्त्री समाजक लोकानुरंजन। दुनू एक दोसरासँ सम्बद्ध अछि। कतहु कतहु अभिचारक क्रम जट जटिनक अंतमे होइछ। मुदा वर्षा हेतु अनुष्ठानक संग लोकानुरंजन। नागर मंचपर प्रस्तुतिक कारणे ओ समस्त जन समुदायक लोकानुरंजन एकटा सशक्त ओ सम्प्रेषणीय माध्यम बनि गेल अछि।

**भाषा शैलीः** जट जटिनक भाषा मैथिली थिक। मुदा विविध जनपदीय क्षेत्रमे ओ स्थानीय बोली-वाणीसं प्रभावित होइछ। उदाहरणार्थ एकहि गीत कें विभिन्न जनपदीय स्वरूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि-

**पूर्णिया जनपदः**

*लिबके चलिहै गे जटिनिया लिवके चलिहै गे।*

*जैसे लीवय कांच करचिया बैसे लिविहै गे।।*

-परम्पराशील नाट्य, पृ.27

**वैशाली जनपदः**

*लिवकय चलही गे जटिनिया, लिवकय चलही गे।*

*चढल जवनिया तोहर लिवकय चलही गे।।*

-वाज्जिका लोक साहित्य पृ. 27

**मधुबनी जनपदः**

*नवहि पडतउ हे जटिन नवहि पडतउ हे*

*जइसन नवतइ धानके शिशवा, तइसन नवबै है।*

-फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला पृ.27



**नेपाल तराइः**

*नविके चलिहे गे जटिनियां नविके चलिहे गे*

*जहिना नवतै कांच करचिया तहिना नवि हे गे।।*

-जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू पृ.7

**बेगूसराय क्षेत्रः**

*लवि क चलिहै गे जटिन लैबिकऽ चलिहै गे।*

*जइसे कांचक करचिया तइसे लवि क चलिहे गे।।*

-जट-जटिन पृ. 14

एहि तरहें तथ्य ओ कथ्यक समानता देखना जाइछ। प्रसंग गीत सभमे मुदा भाषायी रूपक भिन्नताक संगे ई कथ्यात्मक एकरूपता जट-जटिनके सम्पूर्ण मिथिलांचलक रागात्मक एकताक सूत्रमे बन्हने अछि।

'जट- जटिन' लोक नृत्य नेपालक सप्तरी, सिरहा, धनुषा, महोत्तरी, सर्लाहीक मैथिली भाषी क्षेत्रक अतिरिक्तो रौतहट, बारा, पर्सा आदि भोजपुरी भाषी क्षेत्र सभमे समानरूपें प्रस्तुत कएल जाइत अछि।



## ॥ जट जटिनक कथाक्रम ॥

जट-जटिन मिथिलांचलक सामाजिक समस्या सभक दर्पण बनल परम्परित अछि। प्रदर्शनकारी कलाक माध्यमे प्रस्तुतिसँ कथ्यक सम्प्रेषणीयता बढि जाइत अछि। नागर मंचपर प्रस्तुति ओ विवेचनसँ पूर्व ओ एखनधरि बन्न आंगन धरि सीमित छल, मुदा आब ओ विवेचनीय बनि गेल अछि। जट-जटिनक मूल समस्या विवाह थिकै जे एकटा जनसामान्यक परिवारमे केन्द्रित रहितो आइ ओ सामाजिक समस्याक प्रतीक बनि गेल अछि।

विवाह पारिवारिक जीवनक मूल भित्तिक विस्तार घर गृहस्थीक विभिन्न आयाममे देखना जाइछ। स्त्रीगणक लोकनाट्य डोमकछमे सेहो ई व्याख्यायित भेल अछि। वैवाहिक प्रक्रियाक आरंभ विवाहक प्रस्तावसँ होइत अछि, जकर पहल वर पक्षसँ कयल जाइछ। वर पक्षक अभिभावक कन्याक ओहिठाम अपन पुत्र (वर) क लेल विवाहक प्रस्ताव लए कए जाइत अछि, जेना जटक माय विवाहक प्रस्ताव लए कए जटिनक मायक घर जाइत छथि। समाजशास्त्रक दृष्टिसँ वैवाहिक प्रक्रियाक ई प्राचीन व्यवस्था थिक। आदिम जाति- जन जातिमे ई व्यवस्था आइयो प्राय: अक्षुण्ण बनल अछि। मुदा अभिजात्य समाजमे एहि व्यवस्थाकें त्यागि नव व्यवस्था ग्राह्य बनि गेल अछि अर्थात कन्यार्थी वरपक्षक ओहिठाम जाइत छथि। एहि व्यवस्थाकें प्राय: मँगनी कहल जाइछ।

तदनुसार जटिनकें अपन पुतोहु बनयबाक प्रस्तावक संग जटक माय निवेदित करैत छथि, मुदा जटिनक माय ओ जटक मायक बीच इकरार ओ इनकारक स्थिति गीतात्मक ओ प्रश्नोत्तर शैली मे अभिव्यक्त अछि। जटक माय कहैत छथि- हम अहांक बेटीकें पानि भरैत देखने छी, घर नीपैत देखने छी, अहां अपन बेटीक संग हमर बेटाक विवाहक स्वीकृति देल जाओ, मुदा जटिनक माय इन्कारक बाद जटक माय कनेक तमसा कए कहैत छथि- **'लय जयबअ नौ सौ बरीयात........... लय जयबइ मसक बाजा, जोर करवअ विवाह।'** मुदा एहि धमकीक कोनो प्रभाव नहि देखि जटक माय जटनिक लील सेनूर- टिकुली, हँसुली-सिकरी, साया-साड़ी आदिक प्रलोभन दैत छथि। एहि प्रश्नोत्तर संग प्रेक्षकक मनमे जिज्ञासाक क्रम ओ समाधानक



उपक्रमक कारणे औत्सुक्य बनल रहैत अछि। अत: ग्राम्या रंगकर्मी ओ प्रेक्षकक बीच एकरसात्मकताक अनुभूति अद्‌भुत अछि।

एहि मंगनी प्रसंगमे बरियातकक संग मसक बाजा लए जयबाक अलावा कन्याक लेल वस्त्राभूषणक प्रसंग वर्णित अछि। मुदा मिथ्या अहंक कारणे जटिनक माय इहो बाजयमे नहि चुकैत छथि- **'फेर देबअ मसक बाजा, नहि करबअ वियाअ........ मोर जटा रहतै कुमार।** मुदा जट- जटिनक विवाहसँ पूर्व विवाहक भूमिका बनैत अछि- बँका ओ भकुलीक विवाह जे लघुप्रहसनक रूपे हास्य-व्यंग्यक उद्‌भावना करैत अछि।

*बंकाक दल* – *कहाँ रे पयबै, कहाँ रे पयबै*
*डलवा के साजे।*
*मोर बँका रहतै भाय कुमार?*
*भकुलीक दल* – *डामरा भैया भाय भतीजा*
*समधीन के लगवारे।*
*वैहे रे देतौ वैहे रे देतौ, डलवा के साजे।..........*

एहि लघुप्रहसनमे 'समधिनक लगवार' अर्थात समधिनक प्रेमीक नामे गारि देल जाइछ जे वैह विवाहक डालाक साज- सज्जा (सौगात) क प्रबंध करताह। एहि तरहें वैवाहिक प्रक्रियामे डाला-दौरामे वरक घरसँ कन्याक लेल सौगात पठयबाक रेवाज दिस संकेत प्राप्त होइछ। अत: मूलकथाक प्रसंग – प्रतिरूपक रहितो तथ्यात्मक ओ सूचनाप्रद अछि।

विवाहक बाद गौनाक प्रसंग अबैत अछि। सासुरसँ जटिनक लेल गौनाक संदेश लए कए पहिने ब्राह्मण अबैत छथि, मुदा जटिन ब्राह्मणक संग सासुर जयबाक लेल तैयार नहि किएक तँ हुनक पोथी- पतरा ढोबए पड़तनि। फेर हजाम अबैत अछि मुदा हुनको संग जयबाक लेल तैयार नहि, किएक तँ हजाम राहे- बाटे लोकसभक हजामत बनवय लगतै। पश्चात ससुरक क्रम अबैत छैक। मुदा जटिनकें ससुरक संग घूंघट तानिकए चलब पसिन्न नहि । फेर भैंसुरक क्रम अबैत छैक। मुदा ओ भैंसुरोक संग नहि जयतीह। किएक तँ ओ हमेशा अपन छड़िये चमकबैत रहताह। जटिन अपन ननदोसियोक संग सेहो नहि जयतीह, किएकतँ ओ-**'राहे रे वाटे कनखी चलैते गे मैना।'** अंतमे ओ जटक संगे जायब स्वीकार करैत छथि-

सामीके संग हमहुँ जयबै गे मैना

राहे रे बाटे पनमा खिलैते गे मैना,

राहे रे बाटे बीजिया डोलैते गे मैना।

एहि प्रसंगगीत सभसँ मंगनी ओ विवाहक बाद गौनाक क्रमोद्घाटन होइत अछि, जे लोकजीवनक एकटा आचार जनित प्रक्रिया थिक। मंगनी तँ सामान्यो उम्रमे संभव भए सकैछ मुदा गौना आ विवाहक उपक्रम यौवनावस्थाक देहरीये पर शोभैत अछि। आब ओ कांच बांसक बांसुरी नहि रहलीह। आब तँ ओहि बांसुरीकें बजबयवला जट समर्थ भए गेल अछि।

गौनाक पश्चात जटिन जखन नववधूक रूपमे जटक घरमे प्रवेश करैत अछि तँ हुनक करेज कांपि उठैत छनि- कहां बापदादाक दरोगासन घर द्वार ओ कहां जटक पुरान ड्योढी? एहिठामसँ कथानकमे उत्कर्षक आरंभ होइछ एवं पारिवारिक ओ सामाजिक समस्या सभक मकड़लजाल बनए लगैत अछि- नैहरमे उन्मुक्त जीवनक अभ्यासी जटिनकें सासुरमे घूंघट काढि झुकि कए चलब पहिने स्वीकार नहि होइत छनि- **ओ जटक ताना सुनैत नवही पडतउ हे जटिन, नवहि पडतउ हे। जइसन नवितइ धानक शिशवा वइसन नववें हे।'** जटिनकें 'कांचक करची जकां' लचनशील बनए पड़तनि आर ओ सामाजिक मर्यादाकें ध्यानमे राखि आचारग्रस्त होमय लगलीह। पहिने तँ ओ दमभरि प्रतिकार कए थाकि गेलीह - 'हम तँ बाबाक दुलारि बेटी छी तनि कए चलब, जेना गामक जिमदार ओ गामक सिपाही तनिकए चलैत छैक। जखन हम तनिकए चलब तँ बथान पर बैसल ससुर की खम्हापर पर बैसल भैंसुरक माथ लोकलाजसँ झुकि जयतनि। सासुरमे एहि तरहक जटिनक प्रतिक्रिया सभकें उच्छृँखल कैशौर्यक प्रतिध्वनि डा. माथुर कहने छथि''। सासुरक पारिवारिक आचारकें सीखब आवश्यक भए जाइछ।

नव दाम्पत्यक घर आंगनमे राग- उपरागक क्रम बनले रहैत अछि। कखनो अपन चांचल्यकें बाधित होइत देखि जटिन नैहर जयबाक लेल उद्यत भए जाइछ। मुदा खेतमे तैयार मकइकें के कटतैक? चीनाक फसिल के कटतैक? वाडीमे फडल घिउरा के तोडितैक? आदि प्रश्नसभक गीतात्मक उत्तर सहजे दए दैत अछि विभिन्न पाठ रूपमे-

*मैया काटतौ रे जटवा बहिनिया काटतौ रे.........*

*हमरा जाय दय रे नैहरवा सखि संग झूमर खेलवे रे।*

-डा. माथुरा पृ.128

-डा. मौन, पृ.39



*मइया काटतौ रे जटावा बहिनिया काटतौ रे*

*एमरी समइया जटवा हिडुले झुलबै रे।*

-डा. मौन

*घेरा फडलौ गे जटीन झिगुनी फडलै गे*

*तू चल जेबही नैहरबा, घेरा के बेचतौ गे।*

-शशि, सयपत्री, पृ. 184

घर गृहस्थीक एकटा छोर पर जट बैसल प्रकारांतरसँ जटिनकें गृहस्थीक शिक्षा दैत अछि, मुदा ओ अपन दायित्वकें सासु ओ ननदिपर टारैत नैहरक अतीत सुखमे डुबि जाय चाहैत छथि। सखी- वहिनपा संग झूमर खेलि कए अथवा आमक गाछीमे झुला झुलि कए। उपरोक्त गीतांश सभमे सासुर ओ नैहरक बीच डोलैत जटिनक मन एखन धरि संतुलित नहि भेल अछि। ओकर चांचल्य नियंत्रित नहि भेल अछि। ओ गृहस्थीक खाम्हकें तँ स्वीकार कए लेलनि, मुदा परिवारिक बन्हनकें स्वीकार नहि कए पबैत छथि। जट-जटिनक बीच एहि गीतात्मक संवादमे पारिवारिक नोंकझोंकक स्थिति बड स्वाभाविक लगैत अछि।

गृहस्थीक आंगनमे उठैत- खसैत नित नव- नव प्रसंगक कारणे अनेक तरहक समस्याक जन्म होइछ। अनावृष्टिक कारणे दुभिक्षक स्थितिमे मात्र खेतीपर निर्भर किसान- मजदूरकें देश- प्रदेश जयबाक विवशता भए जाइछ। आब ओहि कमाइसँ जटिनक आभूषणप्रियताक तोख राखल जाय अथवा परिवारक आर्थिक समस्याक समाधान कयल जाय। अनावृष्टि ओ अकालक स्थितिमे पहिने लोक मोरंग जाइत छल (मध्यकाल), ढाका- बंगाल जाइत छल (उत्तर मध्यकाल), गोहाटी जाइत छल। उत्तर विहारक मिथिलांचलकें 'अन्नागार' एवं नेपाल तराइकें 'अन्नक बखारी' कहल गेल अछि, जाहिठाम लोक सोनाक कटोरीमे 'दूधभात' खाइत छल। आइ ओ आर्थिक विपन्नताक कारणे जजर बनल अछि।

जटिनक फरमाइशसँ फिरशान जखन जट फरमाइशी गहनाक लेल कलकत्ता जाय चाहैत अछि। जटिन आसन्न पति वियोगसँ बेचैन भए जाइत छथि। पत्नीक इच्छाक पूर्त्ति पतिक धर्म मानल जाइछ मुदा नवदाम्पत्यक रागमय बंधनसँ मुक्ति ओतेक सहज नहि। जटिन आभूषण नहि पेन्हती,मुदा पत्नीक आभूषण पति सतत हुनक आंखिक आगाँ रहथु, तकर अभिलाषी छथि-

जट – *जाय देही गे जटिन देस रे विदेस*

*तोरा लागी लवहु जटिन हँसुली सनेस।*

जटिन – *हँसुली जे लागे जटा गरबेक फांस*

*नहि करही रे जटा पुरबे के आस।*

*पुरबे के पनिया, कुपनियां छै रे जटा*

*लागि जयतौ कोढ के करेज रे जटा।*

*पुरब के छौड़ी सभ जोगिनियां छै रे जटा*

*घुरियो नाही आबय देतौ रे जटा।*

*पलटियो नाही आबय देतौ रे जटा।*

*रही जाही रे जटा नैने के हजूर।*

आभूषण प्रियता स्त्रीगणक सभसँ पैघ कमजोरी मानल जाइछ। मैथिली लोक साहित्यमे 'सोलहो श्रृंगार आ बतीसो आभरण' क परिकल्पना कयल गेल अछि। नेपालसँ संकलित थारू लोक गीतक दुर्गाक गीत नख- शिखमे धारित लोक प्रचलित आभूषणक अनुक्रम आश्चर्यजनित अछि। सींथक मंगटीका, कानक झुमका, नाकक बेसर ओ नथिया, गराक हँसुली ओ हार, डांरक डरकस ओ सिंकरी, बाहिक बाजूबंद, पैरक पैंजनी ओ बिछुआ आदिसँ अलंकृत देवी दुर्गाक लोक विन्यस्त रूपक अनुक्रममे जटिनक लोक आभूषणमे टीका, नथिया, हँसुली, हैकल, डरकस, विछिया, कर्णफूल, पहुँची ठेला आदिक उल्लेख भेल अछि जाहिमे सँ किछु आब अप्रचलित भए गेल अछि।

अगिला प्रसंगमे जखन जटिन जटक खोजमे बहराइत अछि, ओकरा एकटा सोनार हँसुलीक लोभ देखाकए जटक आस- भरोस छोडि देवाक सलाह दैत अछि मुदा ओ सतीत्वक आंचमे तपल सोना जकाँ ओकर प्रतिकार करैत अछि। निम्न लिखित गीतात्मक संवादमे एहि भावक अभिव्यंजना भेल अछि–

सोनार – *हे गे जटिनियां छोडि दे जटक आस।*

*गरवा जोखि- जोखि हँसुली पेन्हैवो, चलें हमरे साथ।*

जटिन – *हे रे सोनरबा भाय, रे अगिया लगैवो तोरे हंसुलिया*

*बज्जर खसैबो तोहर साथ, रहबै जटक आस।.........*

*रे तोरे से सुन्नर हमरो जटहवा*

*बटिया चलैत लचि जाय।*



पूर्वक प्रसंगमे जट सेहो जटिनकें आभूषणक लोभ देखौने छलैक मुदा ओ ओहि आभूषणकें 'तरबाक धूर' कहि कए नकारि देलकै आर ओ आभूषणक अपेक्षा अपन जटकें आखिकं आगां साक्षात ओ अधीन (नेत्रक अधीन, वशांभूत) देखय चाहैत अछि। ओ अपने पतिकें सभसँ पैघ आभूषण मानैत अछि। नारी चरित्रक एकटा ग्राम्य कसौटी पर जटिनक चरित खरा उतरैत अछि।

जट-जटिनमे कतहु परदेश, कतहु मोरंग, कतहु पूरवदेश, कतहु कलकत्ता भागलपुर, कटिहार, बिहार (शरीफ) आदि स्थानमे नोकरीक लेल जयवाक चर्च अछि। ओहिमे पुरूब देश अर्थात मोरंग[43] जयबाक चर्च सर्वाधिक अछि। मोरंग पूर्व विदेहक उत्तर कोणमे अवस्थित एकटा सांस्कृतिक जनपद अछि। मोरंग एकदिस श्री समृद्धिक क्षेत्रक रूपें ख्यात छल, वाणिज्य व्यापारक कारणें तँ दोसर दिस डाइन- योगिन, ओझागुनी धामिझाक्री, तंत्र- मंत्र ओ सिद्धि साधनाक कारणे आभिजात्यक दृष्टिएं कुख्यात छल। ओहिठामक हवा पानि सेहो खराब छल जकर अभिव्यक्ति जट-जटिनक अंत: साक्ष्यसँ प्राप्त होइछ **'मोरंगक पनियां कुपनिया छै रे जटा।'** वनाधिक्य आ नदी- नालाक बाहुल्यक कारणे मोरंग मलेरिया ओ कालाजारक भूभाग छल। असमक कामरूप जकाँ ओहिठामक योगिन ओ मालिनक उल्लेख मैथिली लोक साहित्यमे उपलब्ध अछि। कामरूप- कामाख्याक नयना योगिन[44] एवं मोरंगक कुसमा- दोना मालिन[45] बेस चर्चित छथि। हुनक कामपाशमे फंसि कतेको लोक असमयमे काल कलवित भए गेलाह। माथपंथी मच्छंदर नाथ आ लोकदेवता ज्योतिस पंजियार सेहो फंसि गेल छलाह[46]।

मुदा आर्थिक तंगीसँ मुक्ति एवं जटिनक फरमाइशक पूर्त्तिक लेल जट चुपेचाप मोरंग विदा भए गेल। आब जटिनक चिन्ता बढलनि। ओ कानि- कानि कए पछतबैत छथि–

*जटवा लागि धोतिया रंगले रहलै ना*

*हे रंगले रहलै ना*

*हाय राम इहो रे धोतिया तेजि के*

*नोकरियें गेलै ना।*

मुदा ओ कोन दिस ओ कोन ठाम गेलाह पता नहि। ओना मोरंग तँ पूर्वे देशमे पडैत अछि। आब सासुरमे एकाकी जीवन कठिन जानि ओ नैहर चलि दैत अछि। नैहरक बाटमे एकटा नदी पडैत अछि। अत: ओ नदी कातक झिमनापुर घाटपर आबि मलाहसँ नदी पार कए देवाक अनुरोध करैत अछि– **'भइया मलहवा रे,**

उतारि देही झिमनापुरके घाट।' ओ मनेमन निश्चय कयलक जे- '**बारह बरस हम आंचर बान्हि रहवै, रहबै जटके आस।**' ओ मलाहसँ कहैत अछि–

*जटिन – थारी देबौ एवा- खेवा,*
*लोटा देवौ इनाम। भइया मलहवा रे.........*

*मलाह – नै लेबौ एवा- खेवा,*
*नै लेबौ इनाम*
*बहिनी बटोहिनी गे*
*खोजि ले गे दोसर घटवार।*

जटिन ओकरा अनेक तरहक प्रलोभन दैत अछि, - पाठी देबौ इनाम।....... जटिन देवो इनाम तखन मलहवा झिमनापुर (हरदासपुर घाट) घाट पार उतारवाक लेल तैयार होइछ। ओकर वियोग जनित अंत: पीडाकेँ जानि–

*मलाह नै लेबौ एवा- खेवा*
*जटिन लेबो इनाम।*
*वहिनी बटोहिनी गे*
*उतारि देवौ झिमनापुर के घाट।*

नदीमे पुल नहि रहलासँ नाहेक द्वारा घाट- घाट पर लोक आवागमन करैत छथि। घाट पार करबाक शुल्कके खेवा कहल जाइत अछि। मुदा ग्रामांचलमे नगदीक बदला दोसरो चीजवस्तु घटवार अथवा मलाहकें देल जाइत अछि। झिमनापुर लोक ख्यात घाट अछि। स्त्रीक लेल बेर- कुबेर नैहरेक आस। सासुरे बास कि नैहरे।

अंतत: जट अपन गाम घुरैत अछि। जटिन सेहो अबैत छथि। मुदा किछु दिन संग रहवा क्रमे राग- उपरागक गीतात्मक परिदृश्य होइत अछि- 'अते त कमएलऽ जटा की भेलौ ना सुन मोरा जटा। जटिनके मंगवा उदास लागय ना।..........

*जट – एतेक जे कमैलौं जटिन, तोरा लागीना।*
*सुन मोरी जटिन,*
*मंग टिकबा गढाकए संदुकमे रखलौं ना।........*

*जटिन – हँसुली मंगलिअउ रे जटा*
*सेहो नहि लयले जटा*
*गला उदास जटा।*



*जट – हँसुली जे ललिअउ जटिन*
*सेहो नहि पेन्हले जटिन।*
*तोरे विनल पउतिया जटिन*
*ओहे मे राखलिअउ जटिन*
*माय- बाप निर्धन जटिन*
*बेचि खोचि खलकउ जटिन*
*आबे दे इजोरिया जटिन*
*खेले दे पचिसिया जटिन*
*आब जटिन चल जो नैहर।*

*जटिन – नकलेस मंगलिअउ रे जटा*
*सेहो नहि लयलें रे जटा*
*गला उदास रे जटा*
*कुमारि भल रहिती रे जटा*
*नैहर भल रहिती रे जटा*
*आब जटा चल जो विदेश[48]।*

उपरोक्त गीतात्मक संवादसँ किछु समस्या सभक उद्‌घाटन होइछ- आभूषण प्रियता। वारी वयस ओ अथवा वैरी वयस हो, आभूषण अंग- प्रत्यंगक शोभावर्धन करैत अछि। आभूषण लेल पूर्व देश (मोरंग) दिस गमन। पावनि- तिहार अथवा मेला- ठेलामे आभूषणसँ पारिवारिक समृद्धिक स्तरक अभिज्ञान होइत अछि। आभूषणक सुरक्षाक प्रश्न अलग- पउती- पेटारीमे राखूपेटी- कन्तौरमे राखू अथवा सन्दूकमे। मुदा फरमाइशक अंत नहि। खाहे जटक हाथीक हौदा बिका जाउ अथवा हाथक सोनमा छड़ी–

*जट – हाथीपर के हौदा बिकाय गेल गे जटिन, तोरे बिनु*
*तोरे बिनु हमहु बेकल भेलौं गे जटिन, तोरे बिनु*
*तोरे बिनु महल उदास भेल गे जटिन, तोरे बिनु*
*तोरे बिनु अंगना दुभिया गेल गे जटिन, तोरे बिनु*
*सेजिया पर मकड़ा बिआय गेल गे जटिन, तोरे बिनु[49]।*

नायक अथवा नायिकाक परिस्थिति जन्य वियोगक प्रदर्शन परम्पराशील नाट्यमे अवश्य देखना जाइछ। वियोगकें प्रेमक परीक्षा मानल जाइछ। वियोगक स्थितिकें गीतात्मक अभिनयसँ 'जट-जटिन मे एकटा रोचक स्थितिक उद्‌भावना भए जाइछ। कखनो-कखनो वियोगक मारल जट-जटिनक खोजमे निकलैत अछि- **'सुनमोर जोगिया, सुनमोर भाइ। येही नगरमे जटिन हमर भुलाइ। जटाके छाता जटिन चोराइ। नौ महिना के पेट ले आइ।.......... खोजमोर जोगिया, खोजमोर भाइ।'** कखनो ओ गुआरिनक, कखनो गोढिनक, ओ कखनो लहेरिनक रूप धारण कए गामे- गामे खोजि रहल अछि। एम्हर घर-आंगनक दु:स्थितिसँ ओ मर्माहत भए जाइछ।

दोसर दिस जटिन सेहो जटक वियोगमे मन मारिकए झखैत अछि। अंतमे मर्माहत जट मानिनी जटिनकेँ मनाकए घर लबैत अछि आर नाटकक सुखद अंत होइछ, जे पौर्वात्य नाट्यक विशेषता मानल जाइछ।

जट-जटिनक पुत्र रघुदासक प्रसंग प्रक्षिप्त अछि, जहिना रमखेलिया लवहरि कुशहरि। रामकथाक उत्तर काण्डमे परम्परित कथाक लवकुश काण्ड जकां रघुदास ओ वैदक चिकित्सा प्रसंग प्रक्षिप्त रहितो एकटा रोचकता उत्पन्न करैत अछि। किएक तँ संतानोत्पत्तिकें दाम्पत्य जीवनक उत्कर्ष मानल जाइछ। जट- जटिनक वात्सल्य रघुदासमे केन्द्रित अछि। रघुदासक रोगमुक्तिक हेतु ओ सबकिछु उत्सर्ग करबाक लेल तैयार अछि-

*जटिन* – *रघुदास के हाथके बल्ला तोहरो देवउ रे बइदा*
*रघुदास के देहो न जिआय।*

*वैद* – *रघुदास के हाथके बल्ला, हम न लेवउ गे दइया*
*रघुदा सड़लो गेन्हाय।*

*जटिन* – *रघुदास के देहके कुरता, तोहरो देवउ रे वइदा*
*रघुदास के देहो न जिआय।*

अंततः वैद जी दवा तैआर कए दैत अछि। रघुदास स्वस्थ भए जाइछ। जट-जटिनक ई एकटा मांगलिक उपलब्धि अछि। श्री अनिल पतंग सेहो एहि प्रसंगकें नाट्य प्रस्तुतिमे समावेश कयने छथि[50]।





## संदर्भ स्रोत


1. हमारे लोकधर्मी नाट्य- सं. श्री अनिल पतंग, बेगुसराय, 2001 ई. पृ. 9
2. रमखेलिया- डा. मौन, 'लोकरंग' मे संकलित, भारतीय, लोककला मंडल, उदयपुर, राजस्थान।
3. नाट्यशास्त्र, अध्याय-1, श्लोक-2 ।
4. मिथिला के परम्परित लोकनाट्य-डा. मौन , गोहाटी मे साहित्य अका. द्वारा आयोजित 'फोक थिएटर' विषयक संगोष्ठीमे पठित।
5. जट-जटिन/ सामाचकेवा- श्री अनिल पतंग, बेगूसराय, 2001 ई.।
6. परम्पराशील नाट्य, पटना, 1969 ई पृ. 121- 134 ।
7. लोकधर्मी नाट्य परम्परा, पृ. 78- 83 ।
8. सामा चकेवा- पं. राजेश्वर झा, पटना, 1974 ई.।
9. डोमकछ-डा. उषा वर्मा, 'हमारे लोकधर्मी नाट्य परम्परामे संकलित, 2001ई.।
10. जट-जटिन, पं. राजेश्वर झा, 1974 ई.।
11. हाली- हाली बरसू इन्नर देवता- राम भरोस कापड़ि भ्रमर, मिथिला मिहिर, पटना, 17 जुलाई 1977 ई.।
12. मैथिली लोकगीत, राम इकबाल सिंह राकेश, प्रयाग 2012 वि.।
13. जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू- भ्रमर, जनकपुरधाम, नेपाल1999 ई. पृ.66 ।
14. थारू लोकगीत- प्रो. मौन, विराटनगर, नेपाल, 1968 ई. पृ. 135-36 ।
15. लोक नाट्य जट- जटिन, बिहार सांस्कृतिक विशेष अंक जुलाई 1996 ई.।
16. वैदिक माइथोलोजी- 2, हिल ब्रांट, पृ. 94- 110 ।
17. प्राचीन भारतमे नाग तथा जल पूजा- जयासिंह, पटना, 1986 ई. पृ.39 ।
18. दर्शनीय मिथिला, भाग-4, सत्यार्थी, दरभंगा, 2001 ई. पृ. 166 ।
19. पूर्वाचलीय लोकसाहित्य, चेतना समिति, पटना, 1974 ई.।

20. पानी दो भाई पानी दो, रंगायन, उदयपुर (राजस्थान) अगस्त 1976 ई. ।
21. असम के स्त्री लोक नाट्य, मडई (वार्षिक), विलासपुर, छत्तीसगढ, 2002 ई.।
22. मैथिली लोक साहित्यः स्वरूप ओ सौन्दर्य, डा. रामदेव झा, लहेरियासराय 2002 ई. पृ.-103 ।
23. मैथिली लोकगीत- राकेश, प्रयाग 2012 वि. ।
24. इण्ट्रोडक्शन टू दी फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला, भाग-1 इलाहावाद, 1950 पृ. 48- 50 ।
25. मैथिली लोक साहित्यः स्वरूप ओ सौन्दर्य, पृ.188 ।
26. मैथिली लोक साहित्य का अध्ययन, पटना, 1985 ई. पृ. 343 ।
27. परम्पराशील नाट्य पृ. 151 ।
28. वज्जिका लोक साहित्य, पानापुर-धरमपुर (वैशाली), 1971 ई पृ. 22 ।
29. रंगमंच और नाटक, (बिहार राज्य के मूल नाट्य रूप) पृ. 276 ।
30. श्री अनिल पतंग- जट जटिन, / सामा चकेवा ।
31. तराइक समृद्ध लोक नाट्यः जट जटिन, सयपत्री, वर्ष- 4,2055 वि. काठमाण्डु पृ. 179-86 ।
32. हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास, भाग-16 ।
33. जट-जटिन/ सामा-चकेवा, पृ. 11- 20 ।
34. मैथिली लोकोक्तिः उद्‌भव ओ विकास, डा. कमल कांत झा, जयनगर (मधुवनी), 2002 ई. ।
35. परम्पराशील नाट्य , पृ. 127 ।
36. बज्जिका लोकसाहित्य पृ. 27 ।
37. इण्ट्रोडक्शन टू दी फोकलिटरेचर ऑफ मिथिला, पृ. 48 ।
38. जनकपुरधाम, पृ. 70 ।
39. जट-जटिन/ सामाचकेवा, पृ. 14 ।
40. डोमकछ, डा. मौन, पूर्वाचलीय नाट्य ओ रंगमंच, पृ. 41 ।
41. परम्पराशील नाट्य, पृ. 127 ।
42. थारू लोक गीत, डा. मौन, विराटनगर, नेपाल, 1968 ई. ।



43. मोरंग-मोरंग मै सुन्यौं.......... डा. मौन, धर्मयुग, बम्बई, 28 मइ 1972 ई. ।
44. मिथिला की तांत्रिक देवी नैना योगिन- डा. मौन, रंगायन, उदयपुर (राज.), अक्टू- दिस. 1987 ई. ।
45. हमारी मालिनें, डा. मौन, रमण अभिनंदन ग्रंथ खुटौना (मधुवनी) 2004 ई. पृ. 226 ।
46. मैथिली लोकमहागाथाः कारिख पजियार, डा. महेन्द्र राम, खुटौना, 2002 ई. ।
47. सयपत्री, काठमाण्डु, नेपाल, 2055 वि., पृ.185 ।
48. वज्जिका लोकसाहित्य- श्री मुनीश, पृ. 24- 25 ।
49. परम्पराशील नाट्य, पृ. 133 ।
50. बज्जिका लोकसहित्य, पृ. 32 ।

## किछु आधारभूत ग्रंथ

- बिहार की नाटकीय लोक विधाएं- डा. महेश कुमार सिंह, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना 2001 ई.
- जट-जटिन इन्दुवाला देवी, कला संस्थान, मल्लडीहा (पूर्णिया) 1962 ई.
- बिहार के लोक नाट्य- वासुदेव, बिहार समाचार, पटना, स्वाधीनता विशेषांक 1971 ई.
- बिहार के लोक नाट्य- रेखादास, भारतीय नृत्यकला मंदिर, पटना।
- भारतीय लोकसाहित्य- डा. श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, बम्बई, 1954 ई.
- मैथिलीमे व्यवहार गीत- डा. लोकनाथ मिश्र-कीर्ति ट्रस्ट इलाहाबाद- 2004 ई.
- भोजपुरी नाटक- गोपाल अश्कः नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान- 2061 ई.
- मिथिलाको इतिहास, संस्कृति र कला परम्परा - डा. राजेन्द्र प्र. विमल- 2062 ई.
- मैथिली संस्कृति- डा. राम दयाल राकेश- नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान- 2056 साल।



## जट-जटिनः नाट्यरूप

'जट-जटिन' मिथिलांचलक स्त्रीगण द्वारा स्त्रीगणक लेल अनुरंजनार्थ बन्न घर- आंगनकें मुक्ताकाशीय रंगभूमिमे नृत्यगीत ओ अभिनय युक्त भंगिमाक एकटा परम्परित लोक नाट्य थिक। पुरुष प्रेक्षक सँ मुक्त एहि लोकनाट्यमे स्त्रीगणक पारिवारिक ओ सामाजिक समस्या सभ मुखरित भेल अछि।

मेघराज इन्द्रक प्रकारांतर सँ स्तुति हेतु मंगलाचरणक रूपमे सम्पूर्ण मिथिलांचलमे गाओल जाएवाला गीतमे वर्षा विनु संत्रस्त लोकजीवन मुक्ति लेल वृष्टिकल्पक अभिचार क्रमे बेंग कुटनाइ सँ संभावित वर्षाक आनंदातिरेकमे एकटा ग्राम्य कथाकें मंचस्थ कयल गेल अछि।

मिथिलांचलमे 'जट-जटिन'क विश्रृंखलित कथा सभकें क्रमबद्ध कए ओकरा आधुनिक रंगमंचक अनुकूल प्रस्तुतिक प्रयास कयल गेल अछि, जाहिसँ नागरमंचकें एकटा नवीन दृष्टि, दिशा ओ स्फूर्ति प्राप्त होएबाक उम्मीद कयल जा सकैछ।

### ॥ एक ॥

(सुमधुर संगीत धुनक संग प्रकाश वृत्त उभरैत अछि-' टिकबा जब-जब मंगलियो रे जट टिकवा काहे ने लउले रे........ एकटा स्कालर (प्राज्ञ) विकास भवनक बरामदापर कुर्सीमे बैसल किछु नोट कए रहल छथि।

समय - मध्यरात्री। संगीत स्वर उभरि रहल अछि। स्कालर ध्यानसँ सुनैत बुझवाक प्रयास कए रहल छथि।

स्कालर - रामू। राम!!

रामू - (आँखि मलैत) येस सर।

स्कालर - झाजीकें जगाउ।

रामू - येस सर। (भीतर जाइत अछि।)

(भीतरसँ झाजीक आँखि मलैत प्रवेश)

स्कालर - झाजी। बैसू। रामूकें कहियौक, चाह बनौतैक। झाजी! एहि गीतकें कनेक ध्यानसँ सुनियौक।



झाजी - येस सर। ई तँ मिथिलांचलक गीत थिकेक। नृत्यनाट्य जट-जटिनक गीत बेस लोकप्रिय छैक, सर।

स्कालर - झाजी। हम एहि नाच-गानकें देखए चाहैत छी।

झाजी - असंभव। एकदम असंभव। इट इज ओनली फोर ओमेन।

स्कालर - तखन हम अनुसंधान कोना करबैक?

झाजी - सर, गाममे चलिकए 'जट-जटिन' क विषयमे पूछताछ कयल जा सकैछ।

स्कालर - ठीक छै।

(रामू चाह दए जाइत अछि। प्रकाश लुप्त।)

### ॥ दू ॥

(प्रकाशवृत्त एकटा गरीब किसानक घर पर पसरैत अछि। स्कालर झाजीक संग ओहिठाम पहुँचैत छथि। एकटा बुढा बाहर निकलि कए प्रणाम करैत अछि। बैसबाक लेल खटिया ओछबैत अछि। झाजीक संग स्कालर खाटपर बैसैत छथि। झाजी बूढासँ किछु जानए चाहैत छथि।)

झाजी - स्कालर महाशय जट-जटिनक विषयमे जानए चाहैत छथि।

बूढा - जट जटिन! एकटा जमाना छल। गामक स्त्रीगण राति- राति भरि गबैत छलीह। नचैत छलीह। बन्न घरक अँगनाइमे नचैत-गबैत छथि आर वैह सभ देखबो करैत छथि। खासकए बरसातक आरंभिक दौरमे वर्षा विसुकि जाइत अछि। माने वर्षा नहि होइछ। खेत पथार सुखिकए टटा जाइछ। गाछ बिरीछ। गामक पोखरि-झाँखरि सुखि जाइछ। अकालक डरें लोकसभक करेज कांपए लगैत अछि। मालिक हो वा किसान मजदूर सभ केओ अकाल डरें आतंकित।

स्कालर - तखन?

बूढा - गामघरक स्त्रीगण बेंगकें पकडि ओ उक्खरिमे राखि कुटैत छथि। आर इन्द्र भगवानकें गोहरवैत अछि- बरसू, बरसू इन्नर देवता... ..... आ। इन्द्र महराज वेंगक किकिआएब सुनि एवं स्त्रीगण गोहारि सुनि मुघकें बरसवैत छथिन।

(स्कालर पर प्रकाशवृत्त। ओ नोटबुकमे किछु लिखैत जा रहल छथि।)

## ॥ तीन ॥

**(प्रकाश मध्यमंचपर केन्द्रित। स्त्रीगणक एकटा झुण्ड उक्खरिकें बीचमे राखि बेंग कुटवाक उपक्रम मे लगैत छथि।)**

**समवेत गायन**

*बरिसू बरिसू इन्नर देवता।*
*पानी बिनू पडल अकाल हो लाल।*
*चौर सुखले, चांचर सुखलै*
*सुखि गेलै बबाके जिराते हो लाल।*
*सुखि गेलै भइया के जिराते हो लाल॥*
*धोबियाकें अंगनामे छापर छुपर पनियाँ*
*चमराके आंगनमे छापर-छुपर पनियाँ*
*ओहिमे नहावै छथि वभना पुजारी।*
*धोतियो ने भीजलै जनौओ ने भीजलै*
*रचि रचि तिलक लगावै हो लाल।*
*भीजलै तीतलै हवेलिया ढुकलै*
*बहुआ लेलक लुलुआइये हो लाल।*
*रांडी बभिनिया हरवा जोतै छै*
*पानी विनु पड़लै अकाले हो लाल।*
*दयो नहि लगइ छौ हे इन्नर लोक*
*मयो नहि लगइ छौ हे इन्नर लोक*
*पानी विनु पड़ल अकाले हो लाल।*
*बरिसु बरिसू इन्नर देवता*
*पानी विनु पड़ल अकाले हो लाल।......*
*निरसू के धिया पुता मांड ले कनइ छै*
*खुद्दी ले कनइ छै,*
*दयो नहि लगइ छौ हे इन्नर लोक, पानी बिनु पड़ल अकाले हो लाल।*



## ॥ चारि ॥

(समूह गानक रूपमे नचैत - ओ गबैत स्त्रीगण। कथाक आरंभ)

*एगो छलै जट, एगो जटिनियां हो राम।*
*दुनूमे हो गेलइ परेम हो राम।*
*दुनूके विआह रचैवै हो राम।*
*हो गेलै माइ बाप के विरोधे हो राम।*

## ॥ पांच ॥

(जटक संगे जटक पक्ष आ जटिनक संग जटिनक पक्ष आमने- सामने नचैत-गबैत छथि।)

जटक पक्ष - *हम त लयनहुँ आजन - बाजन, आब करू वियाह,*
*सांवरि गेरूली, जोर करबइ वियाह, हे समधिन।*

जटिन पक्ष - *आगि लागो आजन- बाजन, नहि करबौ वियाह,*
*साँवरि गेरूली, मोर गौरी रहि जइती कुमारि हे समधिन।*

जटक पक्ष - *बज्जर खसौ हाथी घोड़ा, बज्जर खसौ मासक बाजार*
*नहि करवौ वियाह सांवरी गेरूली*
*रहि जयतौ गोरी कुमारी हे समधीन।*

जटिनक पक्ष - *कहां रे पयबै, कहां रे पयबै, डलवाक साजे*
*मोर जटिन रहतै कुमारि।*

(दुनू पक्षक बीच राय- परामर्श। दुनूपक्षक सहमति। जट-जटिन गांठ जोडि अग्नि परिक्रमा करैत। मंत्रोच्चारक संग वियाह सम्पन्न। शहनाई वादन। अंतमे समदाओनक धुनपर जट- जटिनक विदाइ। गांठ बन्हने जटक अनुमन करैत जटिन।)

## ॥ छओ ॥

**(प्रकाशवृत्त गामक बूढा, झाजी ओ स्कालर पर केन्द्रित।)**

बूढा - हौ बाबू। वियाहक बाद जटिन जटक घर जाइत अछि। ओहिठाम शुरू होइत अछि नोंक-झोंक। राग-उपराग ओ शोषण उत्पीड़नक प्रक्रिया।

स्कालर - नारीक शोषण- उत्पीडन? से कोना?

बूढा - जटिन तँ बाप- दादाक दुलारि धिया छलीह। कनेको लागि गेलापर अड़ि जाइत छलीह।

## ॥ सात ॥

**(प्रकाश लुप्त भए कए जटक घर पर पसरैत अछि।)**

जटक दल - *लबिकए चलिहें गे जटिन लवि कए चलिहें गे।*
*जइसे कांच के करचिया वइसे लविकए चलिहैँ गे।।*

जटिन दल - *नहिये लबबौ रे जटा, नहिये लबवौ रे।*
*हम त बाबाके दुलारि धिया ऐंठिके चलबौ रे।*

जटक दल - *लविकए चलिहें गे जटिन लविकए चलिहें गे।*
*जइसे लबइ बेतके छड़िया, वइसे लविहें गे।।*

जटिन दल - *ऐंठिकँ चलबै रे जटा एंठिके चलबौ रे।*
*हम त बाबू के दुलारि बेटी, ऐंठिक चलबौ रे।।*

जटक दल - *डइनियो देखतौ, गुनमा फेंकतौ, मारिये देतौ गे ।*
*बाबाके सम्पतियो गे जटिन, के भोगतौ गे।।*

**(प्रकाश मद्धिम होइत लुप्त भए जाइछ।)**

## ॥ आठ ॥

### समवेत गान

*रामा रहे लागलै जटवा- जटिनिया हो ना।*
*रामा कहियो काल होबे खन खनियां हो ना।*
*रामा एक दिन भोरूका कहनियां हो ना।*
*रामा लड़इ लगलै जटवा- जटिनियां हो ना।।*

जटिन - *भोर भेलइ रे जटा भिनसरवा भेलइ रे*
*जटवा कोइली बोललै रे।*
*जटवा छोड़ि देही अंचरवा*
*हम त अँगना बोहारबै रे।।*



जट - *मैया वोहारतै गे जटिनियाँ, बहिनिया बोहारतै गे।*
*जटिनी आजुके रोहिनिया हम त पलंगवै गमैबे गे।।.....*

जट - *हमे तोरा पुछियौ हे गे जटिनिया*
*दिल से गे, जटिन परेम से गे।*
*झुमका कहा हेरइलें गे?*

जटिन - *सारी राति रे जटवा, तोहरे बिछौनमा रे*
*जटवा तोहरे लगीचवा रे!*
*जटवा भिनुसरवा तोहर मैया चौरौलकौ रे...........*

जटिन - *टिकवा जखन मंगलियौ रे जटा, टिकवा काहे ने लौले रे।*
*अरे वाली उमरिया रे जटा, टिकवा काहे ने लौले रे।।*

जट - *टिकवा जखंन अनलियौ गे जटिन, टिकवा काहे ने पेन्हले गे।*
*अरे वाली उमरिया गे जटिन, टिकवा काहे न पेन्हले गे।।*

जटिन - *हँसुली जखन मंगलियौ रे जटा, हँसुली काहे ने लौलें रे।*
*अरे वाली उमरिया रे जटा, हँसुली काहे ने लौलें रे।।*

जट - *हँसुली जखन अनलियौ गे जटिन, हसुली काहे न पिन्हलें गे।*
*अरे वाली उमरिया गे जटिन, हँसुली काहे न पिन्हलें गे।।*

**(प्रकाश लुप्त)**

## ॥ नौ ॥

बूढा- ई सभ तँ घरेलू महाभारतक भूमिका। आब तँ रोज- रोज लडाइ झगड़ा होइत अछि। कतेक पंचैती कयल जाय? जट-जटिनके झगड़ा। पंच बने लबड़ा। आब तँ कखनो धान कुटैत जटिनकें ओ मूसरसँ मारि बैसैत अछि तँ कखनो भात पकबैत जटिनकें ओ लारनिसँ पीटि दैत अछि।

स्कालर - आब बुझलहुँ।
(प्रकाश सम्पूर्ण मंचपर)
(जटिन रूसिकए नैहर जाइत अछि। जट ओकरा मनाए रहल छथि।)

जटिन - धनमा कुटइते जटवा, मारलक मुसरवेके मार।
सेहो विरोगवे लाल, रामा जाइ छियै नैहरवा
सेहो विरोगवे लाल।

जट - निम्मन- निम्मन टिकवा जे लैलिये जटिन ले
सेहो जटिनिया हमरा छोडि नैहरबे जाइ छै ना ।

जट - चीनमा बुनलियौ गे जटनियां चीनमा बुनलियौ गे।
तू जाइ छे नैहरवा चीनमा के कटतै गे?

जटिन - मैयो कटतौ रे जटवा बहिनियां कटतौ रे।
अबरी रे समइया हम त नैहरे गमैबै रे।।

जट - घिउरा फड़लौ गे जटिन, झिंगुनी फड़लौ गे,
तू चल जेबही नैहरवा, घिउरा के बेचतौ गे?

जटिन - मैयो बेचतौ रे जटवा, बहिनियां बेचतौ गे।
अबरी रे समइया सखी संग झूमर खेलबै रे।।

**( प्रकाश बूढा कथा वाचक पर केन्द्रित। परिधिमे स्कालर एवं झाजी।)**

बूढा - जटिन रूसिकए नैहर चलि जाइछ। नैहरक बाटमे एकटा नदी पड़ैत अछि।
नदी पर कोनो पुल नहि। लोक सभ नाहसँ आर- पार करैत छथि।
नाहो हरदम नहि। नाह भेटियो जाय तँ मलाहक मन।

## ॥ दस ॥

**( मंचपर प्रकाश। नदीकातक झिमनापुर घाट। घाट पर बीडी पीबैत मलाह।)**

जटिन - भइया, मलहवा रे, नइया लगा दे नदिया के पार।
थारी देबौ एवा- खेवा, लोटा देवो इनाम।
भइया मलहवा रे, उतारि देही झिमनापुर के घाट।

मलाह - नहि हम लेबौ एवा- खेवा, नहि लेबौ इनाम।
बहिनी बटोहिनी, खोजिले गे दोसर घटवार।

जटिन - खसी देबौ एवा- खेवा, पाठी देबौ इनाम।
भइया मलहवा रे, उतारि देही झिमनापुर के घाट।



मलाह - नहि लेबौ हम एवा-खेवा, नहि लेबौ इनाम।
बहिनी बटोहनी गे, खोजि लेही दोसर घटवार।

जटिन - बड़ दुखछल छी, नैहरा जाइ छी
जटा से खाइ के मार।
कल जोडै छी, गोर पडै छी, हमरा करि दिए पार।
भइया मलहवा रे, नइया लगा दे नदिया के पार।

मलाह - (द्रवित भए) तोरा देखि कए माया लागै,
जिया फाटइ हमार।
जे कइलें से नीक नइ कइलें,
चलें करि दियौ नैया पार।

जटिन - भइया मलहवा रे

मलाह - हइया रे हइया...........

**( प्रकाश लुप्त )**

## ॥ एगारह ॥

**( प्रकाश बूढा कथा वाचकपर केन्द्रित।)**

बूढा - जटिनकें नैहर चलगेलाक बाद जटक शारीरिक ओ मानसिक स्थिति खराब भए जाइत अछि। घर जटिन बिनु उदास लगैत अछि।
(प्रकाश जटक घर पर पसरि जाइछ। जट उदास बैसल अछि।)

जट - हाथी पर के हौदा बिकाय गेल गे जटिन, तोरे विनु
तोरे बिनु हमहुँ वेकल भेलौं गे जटिन, तोरे बिनु
तोरे बिनु महल उदास भेल गे जटिन, तोरे बिनु
तोरे बिनु अंगना मे दुभिया जनमि गेल, गे जटिन,
सेजिया पर मकड़ा बिआय गेल गे जटिन, तोरे बिनु

## ॥ बारह ॥

**( प्रकाश लुप्त भए कए पुनः बूढ कथा- वाचक पर केन्द्रित।)**

बूढा - जट-जटिन खोजमे निकलि गेल। ओ जेकरा- तेकरासँ जटिनक पुछारि करैत अछि। (प्रकाश पुनः जटपर केन्द्रित)

॥ तेरह ॥

जट - *सुन मोर जोगिया, सुन मोर भाइ*
*इहो नगरमे जटिन मोर आइल?*
*सुनमोर भइया, सुन गे दाइ,*
*इही नगरमे जटिन मोर आइल?*

मोसाफिर - *सुनमोर जटवा, सुन मोर भाइ,*
*एहे नगरमे जटिन नहि आइल।*

**(प्रकाश बूढा कथावाचक पर केन्द्रित)**

बूढा - जटिनक खोजमे जट वेश बदलि- बदलि कए गामे-गामे घुमैत अछि।
कखनो गोआरिनक रूपमे दही बेचैत, कखनो मलाहिनक रूपमे माछ बेचैत तँ कखनो लेहारनक रूपमे लहठी बेचैत, चूड़ी बेचैत।

**(प्रकाश गोआरिनके वेश धएने जटपर केन्द्रित।)**

जट - *दही लेब? दही लेब? मिठगर दही लेब?*

गामक स्त्रीगण- *तोर केकर औंटल दूधवा?*
*तोर केकर पौरल दहिया,*
*तोहर सड़ल गन्हाय छौ दहिया*
*तोहर खट्टा महकै छौ दहिया।*

जट - *सास-ससुरकें औंटल दूधवा*
*माय, सासुके पौड़ल दहिया*
*माय, सांची दूधके दहिया*
*माय, बड मीठ लागै दहिया,*

ग्रामीण स्त्रीगण- *अगे नहि लेबौ, नहि लेबौ*
*तोहर कोय ने पुछै छौ दहिया।*



सिपाही - *हमहूँ त छिए गुवालिन, मालिक के सिपाही*
*मारि डण्टा, फोड़ि के कोहा, खाय लेव दहि-दूधवा।*

जट - *इहो मत जानिहे सिपाही असकर गुवालिन*
*मारि कोहा तोड़व थुथना,*
*राति रहौं कुंजवन, दिन बेचौं दहिया,*
*घेघा सिपाहीके नइ देब दहिया*
*कोय ले गे गहिक बेटी दहिया।*

॥ चौदह ॥

**(प्रकाश लुप्त होइत मलाहिन बनल जटपर केन्द्रित)**

जट - *(गोढिन) ससुरे भैसुरे मोर जाल बुनै ना*
*अकसर बलमुआ मोरा माछ मरैना।*
*माछ ले हे, माछ ले हे, गहिकी बेटी,*
*माछ ले हे, माछ ले हे।।*

ग्रामीण स्त्रीगण- *आहे कौने मछरिया करे गोढिन हे?*

जट - *आहे रेहुआ मछरिया करे गोढिन हे।*

ग्रामीण स्त्रीगण- *आहे गहुम के कै खूटे माछ देवय हे?*

जट - *आहे, गेहुमा के तीन खूटे माछ देवय हे।*

ग्रामीण स्त्री - *तोर मछरी बनबै नइ जानियौ*
*धुए नइ जानियौ,*
*रान्है नइ जानियौ,*
*खबैयाके खियावै नइ जानियौ*
*धियापुता परबौधै नइ जानियौ*
*गोढिया बहुगे।*

॥ चौदह ॥

**(प्रकाश जटिनक घरपर केन्द्रित। जट अपन असली रूपमे प्रकट। प्रकाशवृत जटिन पर केन्द्रित। क्रोधमे भरल जटिन।)**

जटिन - दूर दूर रे जटा। दूर रहिहें रे जटा
सड़ल चाउर रे जटा।
राख छाउर रे जटा।
सड़ल तीमन रे जटा।
वैगन भाटा रे जटा।
दूर रहिहें रे जटा। दूर रहिहें रे जटा।

जट - दूर दूर गे जटिन। दूर रहिहें गे जटिन ।
सड़ल चाउर गे जटिन।
राख छाउर गे जटिन।
बसिया रोटी गे जटिन ।
सड़ल तीमन गे जटिन। दूर रहिहें गे जटिन।
चोटिया गुहइते चल अबिहें गे जटिन।

जटिन - जुलफी सम्हारैत चल अबिहें रे जटा।
धोतिया पेन्हैत चल अबिहें रे जटा।

## ॥ पन्द्रह ॥

**(प्रकाश कथावाचक बूढा पर केन्द्रित।)**

बूढा - अंतमे जट-जटिन कें मनाकए घर लए अबैत अछि। एहि तरहें सभक घर बसि जाइछ। मुदा जेना- जेना समय वितैत जाइत अछि, नोन- तेल लकड़ीक भाव मालुम होमए लगैत अछि, जटिनक फरमाइश अलग। रोजी रोटीक जोगार मे जट मोरंग जाए चाहैत अछि।

## ॥ सोलह ॥

**(प्रकाश वृत जटक घर पर केन्द्रित। आंगनमे जट ओ जटिन।)**

जट - मोरंग मोरंग सुनियै गे जटिन,
मोरंग हमरा जाये दही गे जटिन।
मोरंग से हँसुली ल अयवौ गे जटिन
तोहरे पहिराए हम देखब गे जटिन।



जटिन - मोरंग मोरंग सुनियौ हो जटा
मोरंग देस जनु जाहु हो जटा
मोरंग के पनियां कुपनियां छै हो जटा
लागि जयतौ कोढ करेज हो जटा।
मोरंग के छौरी सभ जोगिनिया हो जटा।
उलटियो ने आवे देतौ हो जटा
पलटियो ने आबे देतौ हो जटा
रहि जाही रे जटा नैना के हजूर।

जट - तोहरे ले लेवौ जटिन मोरंग से टिकवा
ओही मे झमकाइ तोरा देखव से जटिन
मोरंग हमरा जाय दही गे जटिन ।

जटिन - अते जे कमैले जटा की भेलौ ना
सुनु मोर जटवा,
जटिनके मंगवा उदास लागे ना

जट - टिकवा जब जब लौलियौ गे जटिन
टिकवा काहे ने पेन्हले गे
जटनी गे सभामे ललचौले गे
टिकवा विनु।

जटिन - जाहो ते जाहो रे जटवा, देस रे विदेस,
मोरंग क टिकवा लेने आवहु हो राम।

(जटिन जटक पीठ पर हाथक छाप लगवैत अछि। फेर जल पिया कए विदा करैत अछि। दुनू एक दोसराके भारीमनसँ देखैत अछि। प्रकाश लुप्त।)

## ॥ सत्रह ॥

**(प्रकाश कथावाचक बूढापर केन्द्रित।)**

बूढा - जट रोजी- रोटीक खोजमे मोरंग दिस चलि गेल। आब जटिन घरमे असकरं बचि गेल। अगसर जटिनके की- की सह पडैत अछि, जानि नहि। एम्हर बेटाक मन खराब भए गेलैक। गोसांय

पित्तरकें गोहरबैत कोनो लाभ नहि। ओझा-गुनीक तंतर- मंतरसँ कोनो फायदा नहि। अंतमे ओ वैदजीक ओहिठाम जाइत अछि। इनती- विनती करैत अछि।

## ॥ अठारह ॥

(प्रकाश जटक घर पर केन्द्रित। वैदजी अबैत छथि। वैदजी खाटपर पड़ल बेटा रघुदासक नाड़ी टेबि कए नाक भौंह घुमा लैत छथि।)

जटिन - *रघुदासके अँगा-टोपी, रघुदासकेँ अंगा-टोपी*
*तोहरे देवौ रे वेदा, तोहरे देवौ रे वैदा*
*रघुदास के दियौने जिआय।*

वैद - *रघुदासके अंगा- टोपी, रघुदासके अंगा- टोपी*
*हमे की करबै गे दिदिया, हमे की करबै गे दिदिया*
*रघुदास तँ सडले गेन्हाय।*

जटिन - *रघुदास के हाथके बलिया, रघुदास हाथ के बलिया*
*तोहरे देवौ रे वैदा, तोहरे देवौ रे वैदा*
*रघुदास के दियौ ने जिआय।*

वैद - *रघुदास के हाथ के बलिया, रघुदासके हाथ के बलिया,*
*हमे की करबै गे दिदिया, हमे की करबै गे दिदिया*
*रघुदास त सड़ले गेन्हाय।*

(मुदा विनती पर वैदजी जड़ी-बूटी निकालि कए जटिनकें उपचारक विधि बता कए चल जाइत छथि।)

## ॥ उनैस ॥

**(प्रकाश कथावाचक बूढा पर केन्द्रित।)**

बूढा - रघुदास ठीक भए गेल। आब जटक कोनो समाद नहि पाबि जटिन उदास रहए लगलीह।

**(प्रकाश जटिन पर केन्द्रित। अड़ोसन-पड़ोसन खोज-पुछारिमे आबि जाइत छथि। जिज्ञासा करैत छथि।)**



## ॥ बीस ॥

जटिन - *जाहि बाटे पियवा गेलै, दुभिया जनमि गेलै*
*बटिया जोहइते वीजूवन लागल रे की। आहे मइया।*
*पियवा मोरंग गेलै, हमरा से कही गेलै, आहे दिदिया।*

*फूल लागल कँगना लेने अइथिन हो राम।*
*माँगे के टिकबा लेने अइथिन हो राम।*
*रचि रचि जटिनके पेन्हयथिन हो राम।*

## ॥ एकैस ॥

(जट विदेश (मोरंग सँ अबैत अछि। रघुदास दोसर दिससँ आबि कए गोदीमे छडपि जाइत अछि। बाबूजी अइलै। बाबूजी अइलै। सभ केओ चकित भए जाइत छथि। जटक माथ पर एकटा मोटरी छैक। जटिन जटकें देखि लजाकए अंगना भागि जाइत अछि। जट काकीक पैर पड़ैत अछि, मोटरी राखिकए। ताधरि जटिन लोटामे पानि लाबिकए जटक पैर पखारैत अछि। जट जेबीसँ टीका निकाली कए जटिनकेँ पेन्हवैत अछि।

*आहि रे पहिराइ तोरा हम देखब हो राम।*
*तोहराके पहिराइ तोरा हम देखब हो राम।*

**(गीतक क्रममे सभ केओ फ्रीज भए जाइछ। प्रकाश लुप्त)**



# लोक प्रचलित प्रसंग-गीत

'जट-जटिन' हमरा लोकनिक साझा संस्कृतिक एकटा लोकानुरंजन नाट्य विधा थिक। एहिमे पंचमवेदक तात्विक समन्वय लौकिक धरातल पर भेल अछि। वेदज्ञानसँ वंचित आर्येतर लोकनिक हेतु नाट्यशास्त्री भरत ऋग्वेदसँ पाठ, सामवेदसँ गीत- संगीत, यजुर्वेदसँ अभिनय आ अथर्ववेदसँ सक संग्रह कए पंचम वेदक रूपें नाट्य शास्त्रक रचना कयलनि। तदनुसार देवासुरसँग्रामक प्रायोगिक प्रस्तुति कयल गेल। एवं प्रकारे नाट्य शास्त्रक अंत: साक्ष्यक अनुसारे एहि मे देव ओ असुर एवं राजा ओ ऋषि आदिक अलावा गृहस्थ लोकनिक चरित्रक प्रस्तुतिक प्रावधान अछि। जट-जटिनक कथानक गृहस्थ जीवनमे केन्द्रित अछि।

ईस्वी सन्क बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध अर्थात विक्रम संवतक एकैसम सदीक पूर्वाद्धमे लोकसंस्कृतिक संदर्भमे अध्ययन अनुशीलनक क्रमारंभ भेल। एहि क्रमे बन्न घर । आंगनक खुज रंगभूमिमे स्त्रीलोकनिक परम्परित लोकनाट्य सभमे परिगणित 'जट जटिन' ओ डोमकछक लोकप्रियता पूर्वि नेपाल तराइ ओ उत्तर बिहारक सांस्कृतिक जनपद सभमे बेसी अछि। एहिमे जट- जटिनक गृहस्थी आइ लोकजीवनक प्रतीक बनि गेल अछि।

'जट-जटिन' क मूल कथानकमे अनेक प्रसंग कथासभ गुम्फित भेल अछि जाहिसँ ओकर लोकानुरंजकता बढि गेल अछि। मिथिलांचलक विभिन्न उपजनपद सभमे कथ्यात्मक एकरूपता रहितो भाषायी रूपक किंचित भिन्नता देखना जाइछ। अत: जट-जटिनसँ सम्बद्ध किछु प्रसंग गीतसभकें विशेष अध्ययनार्थ संदर्भ सहित संकलित कयल जा रहल अछि।

## गीत संख्या - 1 प्रस्तावना

*सावन भादव केरा रितवन ईजोरिया,*
*सखि, पिया हे, खेलै छै झुमरिया, कदमतरे*
*जब पहु आगे धनि खेलबै, झुमरिया,*
*खेलबै झुमरिया, कदम तरे।*
*धनि हमरा लागि पलंगा विछाय देहो,*
*हमरा लागि।*



*पलंगा बिछते पिया हे, बड़ी देर लगतै*
*से बेरी देर लागत*
*पिया हे, सखि खेलवा उसारतै, सखि सब।*

टि. एहि प्रस्तावना गीतसँ अभिनयक पृष्ठभूमि बनैत अछि। साओन-भादो उत्सव ओ काल दुनू दृष्टिएं कालचक्रक एकटा अनिवार्य अंग बनि गेल अछि। जट-जटिन मे झूमर नृत्यगीतक प्रधानता अछि। प्रस्तावना संवाद गीतमे पुरइनक पात (कमल पत्र) पर नृत्यक भंगिया अभिव्यंजित अछि-''पुरैनी रे पात चढि हो, रे झूमर खेलबै ना।'' (मूल गीतक स्रोत- जट-जटिन: इन्दुवाला देवी, कला संस्थान, मल्ल डीहा (पूर्णियां) 1962 ई.)

## गीत संख्या - 2 उद्दीपन

*चंदा जे उगलै झलामली रे दैया।*
*उगि कय हे छपित नहि होबै, उगि कय।*
*कथि सभ झँपैतै चंदवा रे दैया*
*कथियहि झँपैतै आठो अंग, कथीयहि-*
*बदरी झँपैतै चंदवा रे दैया*
*पटुकहि हम झँपैबै आठो अंग।*

टि. - एहि गीतसँ जट-जटिनक अभिनय इजोरिया रातिमे होयबाक प्रमाण भेटाइत अछि। साओन- भादोक इजोरिया राति ओ रंगकर्मी स्त्रीगणक उज्वल सौन्दर्यक साम्य, रंगभूमिक सम्मोहक पृष्ठभूमि उद्दीपनक काल करैत अछि। बदरी संभावित वर्षाक संकेतक थिक।

(स्रोत-परम्पराशील नाट्य- डा. जगदीश चंद्र माथुर, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1969 ई. पृ. 123)

## गीत संख्या- 3 विवाहक भूमिका

*बंकाक दल - कहां रे पयबै, कहां रे पयबै*
*डलवा के साजे?*
*भकुलिक दल - डोमरा भेया भाय-भतीजा*
*समधीन के लगवारे।*
*वोहे रे देतौ, वोहे रे देतौ*
*डलवा के साजे।*

टि. बंका- भुकलीक गीतात्मक संवादसँ जट-जटिनक विवाहक भूमिका बनैत अछि एवं विवाहक डाला (उपहार- सौगात) लोकप्रचलित रेवाजक संकेत प्राप्त होइत अछि। मुदा वैशाली जनपद (मिथिलाक दक्षिणी सीमांत गंगाक उत्तर तटवर्ती क्षेत्र) मे निम्न रूपें प्रचलित अछि-

## गीत संख्या - 4

जट - *हम त लाया आजन- बाजन, तुम करो वियाह*
*सामर गेरूली, हो जतइ जटा के वियाह*
*सामर गेरूली, हो जतइ जटा के वियाह।*

जटिन - *न लेबे आजन- बाजन, न करबे वियाह*
*सामर गेरूली मोर गउरी रह जतइ कुमारी।*

जट - *हम त लाया हाथी- घोडा, तुम करो वियाह*
*सामर गेरूली- हो जतइ जटा के वियाह।*

जटिन - *न सकारब हाथी- घोडा न करबे वियाह*
*सामर गेरूली मोर जटिन रह जतइ कुमारि।.............*

(स्रोत - बज्जिका लोकसाहित्य, मुनिश्वर राय मुनीश, जनता हाई स्कूल, पानापुर धर्मपुर (वैशाली), 1971 ई. पृ. 30)

टि. एहि प्रसंगे गीतक प्रतिरूप बेगूसराय क्षेत्रमे एवं प्रकारें पाओल जाइछ- ''बज्जड़ि खसौ हाथी- घोड़ा, नै करबै वियाह। सांवरि गेरूली मोर गउरि रेह जइती कुमारी।''

(स्रोत- जट-जटिन / सामाचकेवा-अनिल पतंग, नाट्य विद्यालय बाधा, सुट्टदनगर, बेगूसराय, 2001 ई. पृ. 14)

## गीत सं. 5 गौना प्रसंग

*मैना, ननदोसिया के संग हम नहि जयबै गे मैया,*
*मैना, राहे रे वाटे कनखी चलैते गे मैना।*
*मैना, ससुरा के संग हम नहि जयबै मैना,*
*मैना, राहे रे बाटे घोघवा तनैतै गे मैना।*
*मैना, भैंसुर के संग हम नहि जयबै गे मैना,*
*मैना, राहे रे वाटे वेरैते गे मैना।*
*सामी के संग हमहूँ जयवै गे मैना, जयबै गे मैना,*
*मैना राहे रे बाटे पनमा खिलैते गे मैना*
*मैना, राहे रे वाटे वीजिया डोलैते गे मैना।*

(स्रोत- परम्पराशील नाट्य, डा. माथुर, पटना,1969 ई.) टि. जटिन अपन ननदोसी, ससुर, भैंसुर आदिक अपेक्षा जटक संग जयबाक अभिलाषा रखैत अछि।



## गीत सं.- 6 नव दाम्पत्य

जटिन - *भोर भेलैय रे जटा भिनसरवा भेलै रे*
*जटवा कोइलिया बोललै रे।*
*जटवा छोड़ि देहि अचरवा*
*हम त एगंना बोहरवै रे।*

जट - *मैया बोहरतै गे जटिनिया*
*बहिनिया बोहरतै गे।*
*जटिनी आजुके रोहिनिया*
*हम त पलगंवे गमैवै गे।।*

(स्रोत- परम्पराशील नाट्य, डा. माथुर, पटना, 1969 ई. पृ. 127)

## गीत सं. 7 नव-दाम्पत्य

जट - *हम तोरा पूछियों गे जटनिया*
*दिल से गे, जटिनी परेम सय गे।*
*झुमका कहाँ हेरैलें गे?*

जटिन - *सारी रात हेरे जटवा तोहरे बिछोनमा रे*
*जटवा तोहरे लगीचवा रे*
*जटवा होयतै भिनुसरवा तोहर मैया चोरौलकौ रे।*

(स्रोत- परम्पराशील नाट्य, डा. माथुर, पटना, 1969 ई पृ. 127)

## गीत सं. 8 दाम्पत्य प्रसंग

जटिन - *भोर भइले हो जटवा, भोर भइले हो,*
*छोरू न अचरवा जटवा घरवा बोहारवइ हो।*

जटा - *मैया बोहारतइ गे जटनी बहिनिया बोहारतइ गे,*
*गाँव के धनकुनिया छउरी सेहो दुसलउ गे,*

जटिन - *मइया बोहाबइ गे जटनी, बहिनिया बोहाबइ गे,*
*गाँव के धनुकिनिया छउरी सेहो बाधबइ गे।*

(स्रोत- बज्जिका लोकसाहित्य, श्री मुनीश, पानपुर- धर्मपुर, 1971 ई. पृ. 28)

टि. -शयनगृहसँ भोरे जटिन घर आंगन बहारबाक लेल जाए चाहैछ, मुदा जट ओकरा रोकि रहल अछि, जे माइ-बहिन बहारतैक, धनुकाइन बहारतैक। हमरा सँगे रहू।

## गीत सं. 9 सामाजिक आचार

जटा - *लिबकऽ चलही गे जटिनिया लिबकऽ चलही गे,*
*चढल जवनिया तोहर लिवकऽ चलही गे।*

जटिन - *नहिंए लिवबऽ रे जटा नहिंए लिबवऽ रे,*
*हम त बाबू के दुलारि धिया, एंठकऽ चलवऽ रे।*

जटा - *लिवही पड़तउ गे जटिन लिवही पड़तउ गे,*
*धनमा मे सीस जइसन लिवही पड़तउ गे।*

जटिन - *नहिंए लिबवउ रे जटा, नहिंए लिबवउ रे,*
*भइया के दुलारी बहिनी, एंठकऽ चलबउ रे।....*

जटा - *लवने बनतउ गे जटनी, लवने बनतउ गे,*
*अइठं के चलवे गे जटिन, अइठं के चलवे गे*
*डइनिया देखतउ गुनमा फेकतउ, मारिये देतउ गे,*
*बाबा के सम्पतिया गे जटनी के भोगतउ गे।।*

(स्रोत- वज्जिका लोक साहित्य, श्री मुनीश, पृ. 27- 28)

टि.-नववधूकें धानक शीश जकां नविकए चलबाक शिक्षा देल गेल अछि।

## गीत सं. 10 हाट- बाजार

जट - *ढुल चल दिहुली ढुल चल*
जटिन - *कहां ढुलब गे दिदिया*
जट - *सोनरे दुकनवा ढुल चल*
जटिन - *सोनार के पूत मोही मारलक।*
जट - *कौने गुनहिए मारलक?*
जटिन - *टीका छुअत मोही मारलक।*
जट - *मारवौ रे सोनरा तोहर सोनारीन के*
*मोरी विहुल के मारलक*
*ढुल चल विहुली ढुल चल।*



जटिन - *कहां ढुलब गे दिदिया?*
जट - *वजजवे दुकनमा ढुल चल,*
जटिन - *वजजबा के पूत मोरा मारलक।*
जट - *कोन गुनहिये मारलक?*
जटिन - *सड़िया छुअत मोही मारलक।*
जट - *मारवौ रे बजजबा तोहर बजाजिन*
*मोरी विहुल के मारलक।*

(स्रोत- परम्पराशील नाट्य, डा. माथुर, पटना,1969 ई. पृ. 128-29)

टि.-जट जटिन सँगे हाट- बाजार जाइत अछि। सोनार ओ वजाजक दोकानमें।

## गीत सं. 11 खेती-पाती

जट - *चीनमा बुनलियै गे जटिनिया, चीनमा बुनलियै गे,*
*तू जाइ छै नैहरवा चीनमा के कमइतै गे?*

जटिन - *मइया कमइतौ रे जटवा, बहिनिया कमइतौ रे,*
*एमरी समइया जटवा नैहरे गमइवे रे।*

जट - *चीनमा कमैलियै गे जटिनिया चीनमा कमैलियै गे,*
*एमरी समइया चीनमा के कटतै गे?*

जटिन - *मइयो काटतौ रे ज़टवा बहिनियो काटतौ रे,*
*एमरी समइया जटवा, हिंडुल झुलवै रे।*

(स्रोत- मिथिलांचलक लोक नाट्य डा. मौन, पूर्वांचलीय नाटक ओ रंगमंच भाग-2, चेतना समिति, पटना, 1977 ई. पृ. 39) टि. - जटकें चीनाक खेती कमौनी ओ कटनीक चिन्ता छनि, मुदा जटिन अपन अल्हडताक कारणे नैहर जा कए झूमर खेलए चाहैत अछि। झूला झूलए चाहैत अछि सखी सभक संग।

## गीत सं. 12 वस्त्राभारण

जटा - *निम्मन निम्मन टिकवा रे ललिअइ जटनी लागि न,*
*सेहो जटिनिया हमरा छोड़ि नइरहरवे जाइ छइ न,*

जटिन - निम्मन निम्मन धोतिया ललिअइ जटवे लागि न,
सेहो जटवा हमरा छोड़ि परदेसवे जाइ छइ न।

जट - निम्मन निम्मन पहुँची रे ललिअइ जटनी लागि न,
सेहो जटिनिया हमरा छोडि नइहरवे जाइ छइ न।

जटिन - निम्मन निम्मन कुरता ललिअइ जटवे लागि न,
सेहो जटवा हमरा छोडि परदेसवे जाइ छइ न।
(स्रोत- वज्जिका लोक साहित्य- श्री मुनिश, पृ. 29)

टि. - जट-जटिनक लेल पहुँची आदि एवं जटिन अपन जटक लेल धोती अनैत अछि, तइयो दुनू एक दोसरकेँ छोड़ि कंए बाहर जा रहल अछि।

## गीत सं. 13 सासु- पुतोहु

जटिन - लाबऽ सासु हँसुआ कि कटिअइ मेथिया के साग,
सासु कटिअइ मेथिया के साग,
गोरीया झूमर खेलइ मैदान।

सासु - न हइ पुतहु हँसुआ कि करिले लोहरा भतार
कि करिले लोहरा भतार,
गोरीया झूमर खेलइ मैदान।

जटिन - लाबऽ सासु सुपवा कि रखिअइ मेथिया के साग,
कि रखिअइ मेथिया के साग, गोरीया झूमर खेलइ मैदान

सासु - न हइ पुतहु सुपवा कि करि ले डोमवा भतार,
कि करि ले डोमवा भतार, गोरीया झूमर खेलइ मैदान।
(स्रोत- संकलन, डा. मौन, महनार 'वैशाली')

टि.-खेती- पथारीक लेल सासुसँ हँसुआ, सूप आदिक व्याजें अपन दायित्व मँगैत अछि। सासु ओकरा लोहार, डोम आदिक नामे बहटारैत अछि।

## गीत सं. 14 वियोग प्रसंग

जटा - जाय देही गे जटिन देस रे विदेस
तोरा लागी लबहु जटिन नथिया सनेस।

जटिन - नथिया त हे जटा तरबा के धूर
घरही रह जटा के हजूर।



जटा - जाय देही गे जटिन, देस रे विदेस
तोरा लागी लवहु जटिन टिकवा सनेस।

जटिन - टिकवा त हे जटा तरवा के धूर,
घरही रहू जटा नयने के हजूर।
हँसुली जे लागै जटा गरबे के फांस,
नहि करही रे जटा पूरबे के आस।
पूरब के पनियां कुपनियां छै रे जटा
लागि जयतै रे जटा कोढ- करंज
रही जाही रे जटा नयने के हजूर।
(स्रोत- जट जटिन, डा. मौन, महनार (वैशाली) 2005 ई.)

## गीत सं. 15 रागात्मक प्रसंग

जटा अइसन किसमिस कि सड़िया कीन के लावे,
आ जा हे सखी, डारो मे विराजे।
जटिन अइसन किसमिस कि सडिया मोर नेरा दे,
आ जा हे सखी, अलना पर विराजे।
जटा अइसन किसमिस कि चोलिया कीन के लावे,
आ जा हे सखी, देहो मे विराजे।
जटिन अइसन किसमिस कि चोलिया मोर नेरा दे,
आ जा सखी, खुटटी पर विराजे।

टि. जटिनक फरमाइसकें पूरा करैत जट एवं फरमाइसकें टारैत- बहटारैत जटिन दाम्पत्य जीवनक आरंभिक दशाकें दरसवैत अछि।
(स्रोत- डा. मोन, महनार (वैशाली)

## गीत सं. 16 हाट- बाजार

जटिन - सोनपुर हटिया भीषम बजरिया
रोज रोज हटिया जइवो रे जटवा।
धोती किनवौ, टोपी किनबौ
तोराके हिया तरसइवो रे जटवा।

जट - हाजीपुर हटिया भीषम बजरिया
रोज रोज हटिया जइवो गे जटिन।

टीका किनवो, टपरा किनवौ
तोरा के जिया तरसइवौ गे जटिन।
(स्रोत- जट- जटिन, डा. मौन, महनार (वैशाली)

टि.- ग्राम्य जीवन मे हाट- बाजारक महत्व।

### गीत सं. 17 राग - उपराग

जटिन - धनमा कुटइते जटवा मारले मुसरवे के मार
मारले मुसरवे के मार, ओहें विरोगवे लाल
जटवा जा छिअय नइहरवा लाल, ओहें विरोगवे न।

जटा - धनमा कुटइते जटनी कलिअउ दुलरवे लाल
कलिअय दुलरवे लाल,
जटनी मती जो नइहरवे लाल ओहि विरोगवे न।

जटिन - भतवा पकवइते जटवा मार ले चलओने के मार
मारले चलाओने के मार,
जटवा छिअउ नइहरवे लाल, ओहे विरोगवे न।

जटा - भतवा पकवइते जटनी कलिअउ दुलरवे लाल
कलिअउ दुलरवे लाला,
जटनी मत जो नइहरवे लाल, ओहे विरोगवे न।
(स्रोत- जट जटिन, डा. मौन, महनार (वैशाली)

टि० - घर - गृहस्थीक प्रवाहमे नोक झोंकक स्थिति।

### गीत सं. 18 परदेश जएबाक प्रसंग

जटा - पुरूबिया हमे जयबउ गे जटिन,
पछिमिया हमे जयबउ गे जटिन,
मइयो नहि हारवउ गे जटिन,
बहिनियो नहि हारबउ गे जटिन,
सौतिन साल हम देखयबउ गे जटिन।

जटिन - पुरूविया हमे जयबउ हो जटा,
पछिमिया हमे जयबउ हो जटा,



भइयो हारि अयली हो जटा,
बहिनियो हारि अयली हो जटा,
सौतिन साल नहि देखबइ हो जटा।
(स्रोत- बज्जिका लोक साहित्य, श्री मुनिश, पृ. 31)

टि०- स्त्रीगण सब किछु बर्दाश्त कए सकैछ, मुदा सौतिनक छाहो नहि।

### गीत सं. 19 मोरंग गमनक प्रसंग

जट - मोरंग मोरंग सुनइ छियइ गे जटिन,
मोरंग हमरा जाय देहि गे जटिन।
मोरंग के टिकवा लए अइवौ गे जटिन,
तोहरो पहिराइ हम देखब गे जटिन।

जटिन - मोरंग मोरंग सुनइ छियइ हो जटा,
मोरंग देस मत जाहु हो जटा।
मोरंग के टिकवा मे अगिया लगैबै हो जटा
मोरंग के छौरी सभ जोगिनिया हो जटा
उलटियो नाही आबे देतो हो जटा
पलटियो नाही आबे देतो हो जटा
आब जटा रहि जाहो हजूर।
(स्रोत- जट जटिन डा. मौन, महनार (वैशाली) 2005 ई.)

टि. मोरंगक ख्याति वाणिज्य- व्यापारक अतिरिक्त डाइन- जोगिनक तंत्र-मंत्रक लेल सेहो अछि।

### गीत सं. 20 राग - उपराग

जटिन - टिकवा जब जब मंगलियौ रे जटा,
टिकवा काहे न लउलें रे।
अरे वाली उमरीया रे जटा
टिकवा काहे न लउलें रे।

जट - टिकवा जव जव अनलियौ गे जटिन,

टिकवा काहे न पेन्हलें गे।

अरे वाली उमरिया गे जटिन,

टिकवा काहे न पेन्हलें गे।..........

(स्रोत- जट- जटिन / सामा-चकेवा, श्री अनिल पतंग, बेगूसराय, 2001 ई. पृ. 15)

टि० - जटिनक आभूषणप्रियताक तोष- परितोषक भावात्मक अभिव्यक्ति अछि एतऽ।

## गीत सं. 21 नदी पर जएबाक प्रसंग

जटिन - भइया मलहवा रे नइया लगा दे झिमनापुर के घाट,

मलाह - बहिनी बटोहिन गे खोज ले गे दोसर घटवार।

जटिन - हम देवउ अनी- दुअन्नी, हम देवउ इनाम,

भइया मलहवा रे, नइया लगा दे झिमनापुर के घाट।

मलाह - नहि हम लेबउ अनी- दुअन्नी, नइ लेबइ इनाम,

बहिनी बटोहिनी गे खोज लेअि दोसर घटवार।

जटिन - हम देबउ चानी सोना हम देबउ इनाम

भइया मलहवा रे नइया लगा दे झिमनापुर के घाट।

मलाह - नहि हम लेवइ चानी-सोना, नै लेवइ इनाम

वहिनी बटोहिनी गे खोज ले गे दोसर घटवार।

(स्रोत- दी फोक लिटरेचर ऑफ मिथिला, डा. जयकांत मिश्र, इलाहाबाद, 1951 ई.)

टि. - नैहर जएबाक बाटमे नदी पार उतारबाक हेतु मलाहसँ निवेदन-प्रतिनिवेद्न।

## गीत सं. 22 खेती-पातीक दायित्व

जट - घिउरा फरलौ गे जटिन, झिगुनी फरलौ गे

तों चलि जइबही नइहरवा, घिउरा के बेचतौ गे ।



जटिन - मैया बेचतौ रे जटवा, बहिनिया बेचतौ रे

ऐ बेरी त लगनमा हम त नहिरे जैबो रे।

जट - पलंग घोरवे गे जटिन, तोसक भरवै गे,

ऐ वेरीक जाडा हमरा लग के सुततै गे।

जटिन - बहिनी सुततौ रे जटवा बहिनी सुततौ रे

ऐ वेरी त फगुनमा हम त नहिए अयवौ रे।

जट - कलकत्ता जयवौ गे जटिन, बंगाला जेवौ गे।

रूपैया जे पठेवौ जटिनियां के रखतौ गे।

जटिन - भैया रखतौ रे जटा वहिनियां रखतौ रे

ऐ वेरी जे लगनमा हम हम त नहिरे जेवौ रे।

(स्रोत- जनकपुरधाम, श्री भ्रमर, जनकपुरधाम, नेपाल, 2056 वि. पृ. 69)

टि०- जटिनकें दायित्व बोध करबैत जट, मुदा जटिन अपन मनोरंगमे विहरैत।

## गीत सं. 23 प्रलोभन

सोनार - हे गे जटिनिया, छोड़ आब जटवा के आस

गरबा जोखि जोखि हँसुलि पेन्हैवो

चले हमरे संग।

जटिन - हे रे सोनरबा भाइ!

अगिया लगेबौ तोरे हँसुलिया

बजरा खसैबो तोहर संग

बारह बरख हम आंचर बान्हि रखवै,

रहबै जटे के आस।

(स्रोत- जट- जटिन तराइका समृद्ध लोक नाट्य, श्याम सुन्दर शशि, सयपत्री, मैथिली विशेषांक, 2005 वि; काठमाण्डू, नेपाल । पृ. 184- 185

टि. - सोनारंक प्रलोभनकें ठोकरबैत एक पतिव्रता जटिनक आत्माभिमान।

## गीत सं. 24 जटक वियोग प्रसंग

जट - सुन मोर जोगिया, सुन मोर भाइ
यही नगर मे जटिन हेराइ।
जटाके छाता जटिन चोराइ।
नौ महिना के पेट लेके आइ
सिरो के टोपी सेहो ले आइ,
हाथो के घड़िया सेहो ले आइ
खोज मोर जोगिया, खोज मोर भाइ

ग्रामीण - येही नगरी मे जटिन जटिन न आइ
जटा के छाता सेहो न लाइ।
सिरो के टोपी सेहो न लाइ
हाथो के घड़िया सेहो न लाइ।
खोज मोर जोगिया, खोज मोर भाइ।

(स्रोत- परम्पराशील नाट्य डा. माथुर पृ. 131)

## गीत सं. 25 जटक वियोग वेदना

जट - हाथी पर होदा, बिकाय गेल गे जटिन
तोरे विनु हमहुँ बेकल भेलों गे जटिन
तोरे विनु महल उदास भेल गे जटिन
तोरे विनु अंगना मे दुभिया जनमि गेल गे जटिन
सेजिया पर मकड़ा विआय गेल गे जटिन तोरे विनु।

(स्रोत- संकलन- डा. मौन, महनार (वैशाली) 2005 ई.)





## राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

जन्म : 2008 साल, बघचौरा, जिला- धनुषा

शिक्षा : एम.ए. (मानद् पी-एच.डी.)

सम्प्रति : प्रधान सम्पादक : गामघर साप्ताहिक, जनकपुर एक्सप्रेस दैनिक

प्रकाशित कृति :

बन्न कोठरी औनाइत धुआं (कविता), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), तोरा संगे जएबौ रे कुजबा (कथा), मोमक पघलैत अधर (गीत-गजल संग्रह), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर वसन्ती (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक), जनकपुरधाम र यस क्षेत्र का सांस्कृतिक सम्पादहरू (नेपाली आलेख संग्रह), **Cultural Heritage of Janakpur (English)**, ठेकान पर (विचार-संग्रह)

पुरस्कार सम्मान :

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा पचास हजार टाकाक मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार, अ.मै.स. मुम्बई द्वारा मिथिला रत्न, वि. से. सं. द्वारा मिथिला विभूति, मै. सा. प., जनकपुर द्वारा वैदेही प्रतिभा पुरस्कार, जा.क.प. जनकपुर द्वारा प्रतिभा पुरस्कार एवं सम्मान, जि.वि.स. धनुषा द्वारा पुरस्कार एवं सम्मान, मधुरिमा नेपाल द्वारा 2062क मधुरिमा सम्मान, मै.सा.प. वीरगंज, आकृति, जनकपुर आदि सँ सम्मानित।

Cover Design : Abhay Kumar Jha